(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 50, अंक 8, फरवरी, 2015
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

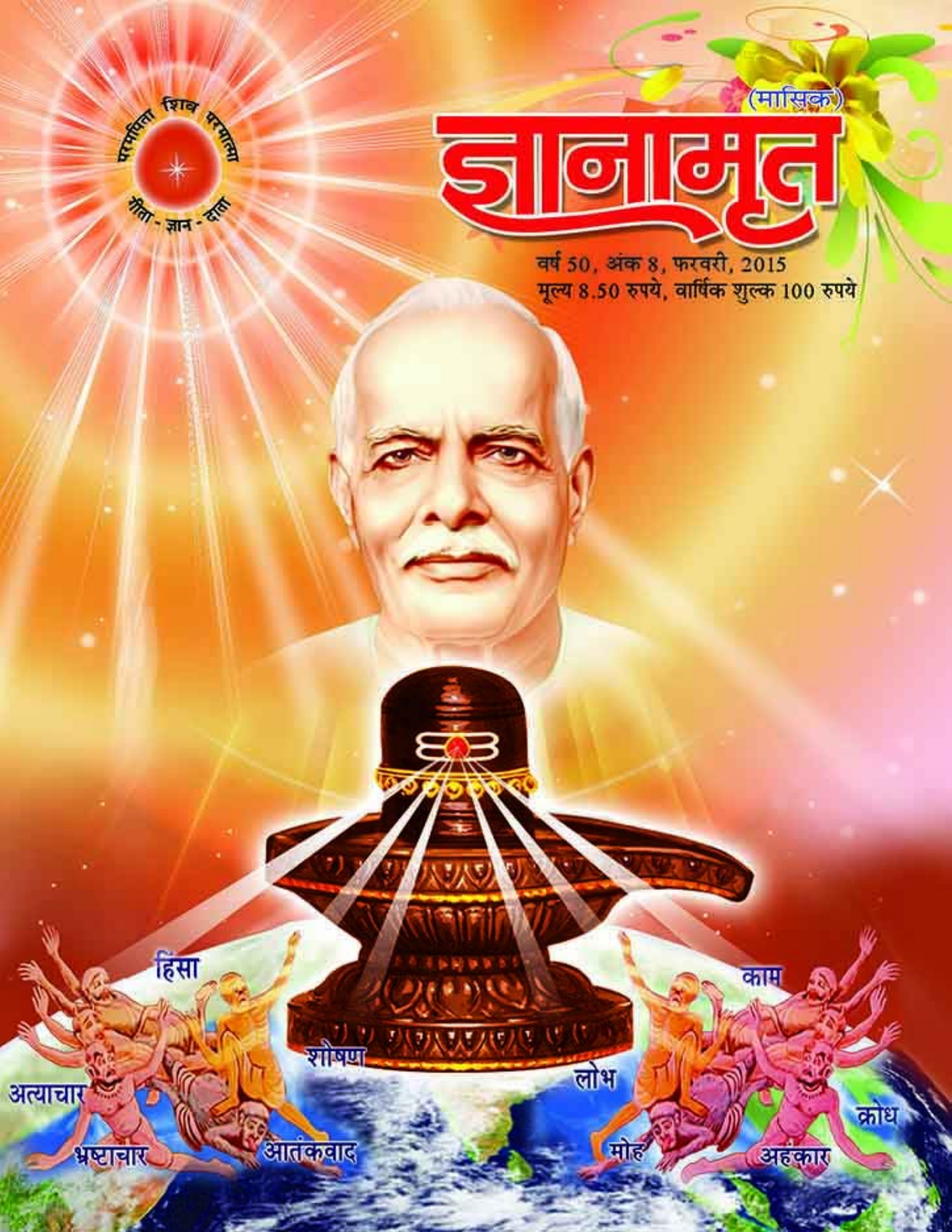

1.सोनीपत (विश्व कल्याण सरोवर)-रिट्रीट सेन्टर की प्रथम वर्षगाँठ के अवसर पर केक काटते हुए राजयोगिनी दादी जानकी, ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.हंसा बहन तथा अन्य। **2.शिवगंज**- सेवाकेन्द्र के नये भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. पूनम बहन तथा अन्य। **3.ओ.आर.सी.(गुडगाँव)**-केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री भाता विजय सांपला को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.बृजमोहन भाई। साथ में ब्र.कु.गीता बहन। **4.कोच्चि**- 'मूल्य और आध्यात्मिकता' विषय पर आयोजित सेमीनार के उद्घाटन के अवसर पर ईश्वरीय स्मृति में डॉ.बी.मधुसूदन कुरूप, कुलपति, केरल यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीज एंड ओशियन स्टडीज, ब्र.कु.राधा बहन, ब्र.कु.वसन भाई तथा अन्य। **5.गुलबर्गा**- 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बहन मार्गरेट, ब्र.कु.चक्रधारी बहन, कर्नाटक के नगर पालिका एवं स्थानीय प्रशासन मंत्री भाता कमर उल इस्लाम, ब्र.कु.प्रेम भाई, ब्र.कु.निजार भाई, ब्र.कु.विजय बहन तथा एन्थोनी फिलिप। **6.हैदराबाद (शांति सरोवर)**- 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए तेलंगाना के परिवहन मंत्री डॉ.पी.महेन्द्र रेड्डी, ब्र.कु.जयन्ती बहन, आन्ध्र प्रदेश तथा तेलंगाना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जी. चन्द्रैय्या तथा ब्र.कु.कुलदीप बहन। **7.कोलकाता (रॉय बागान)**- 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम भाता केशरी नाथ त्रिपाठी, महिला तथा बाल कल्याण राज्यमंत्री डॉ.शशी पांजा, भक्ति वेदान्त इन्स्टीट्यूट के निदेशक स्वामी वृजेन्द्र कुमार दास, ब्र.कु.बिन्दु बहन तथा अन्य।

संजय की कलम से ..

शिवरात्रि का गूढ़ रहस्य

स्वयंभू, अजन्मे, निराकार परमपिता परमात्मा शिव का दिव्य जन्मोत्सव ही शिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। अजन्मे का जन्मोत्सव! निराकार का साकार स्वरूप!! स्वयंभू का अवतरण!!! कितना विरोधाभास है? क्या रहस्य है इसका? कौन-सी पहेली है यह? इस रहस्य का उद्घाटन हो जाने पर, इस पहेली का हल हो जाने पर विश्व के सारे रहस्य खुल जाते हैं, सृष्टि कमलवत् हो जाती है तथा जीवन आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है।

जगतपिता का कोई पिता नहीं

आत्माओं का जन्म होता है और परमात्मा का अवतरण। आत्मा और परमात्मा में यही प्रमुख अन्तर है। कर्म-बन्धन के कारण गर्भ से उत्पन्न होने पर आत्माएं जन्म-मरण के चक्र में पड़ जाती हैं लेकिन परमात्मा का आवागमन नहीं होता। वे पुनर्जन्म के चक्र से परे हैं। कर्मातीत होने के कारण परमात्मा किसी के गर्भ में नहीं आते। कोई माँ उन सर्वशक्तिमान् को अपने गर्भ में धारण नहीं कर सकती। जगतपिता का कोई पिता नहीं हो सकता। 'परमात्मा शिव स्वयंभू' हैं। सर्व आत्माओं के कल्याणार्थ वे अवतरित होते हैं अर्थात् परकाया प्रवेश करते हैं। वे योगबल से प्रकृति को वश में कर एक मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं और उनके मुख द्वारा सर्व जीवात्माओं को प्राय:लोप गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर अधर्म का विनाश तथा सद्-धर्म की पुनर्स्थापना कराते हैं।

परमात्मा शिव योगियों के भी योगी

भारतवर्ष में 'योगियों के परकाया प्रवेश' की बात तो सर्वविदित है। फिर परमात्मा शिव तो योगियों के भी योगी हैं। परमात्मा का अवतरण ज्ञान-योग की शिक्षा देकर जीवात्माओं को पतित से पावन बनाने के लिए होता है। यदि वे गर्भ से जन्म लें तो गर्भ का समय और बाल्यावस्था का समय व्यर्थ चला जाये। युवावस्था भी बुजुर्गों को शिक्षा देने के लिए उपयुक्त नहीं है। आध्यात्मिक शिक्षा तो वानप्रस्थावस्था में ही प्रभावोत्पादक ढंग से दी जा सकती है, जब मनुष्य अनुभव सम्पन्न हो जाता है। गर्भ से जन्म लेने पर, परमात्मा को ज्ञान देने के पूर्व पचास वर्ष शरीर के परिपक्व बनने की प्रतीक्षा में लगाने पड़ेंगे। अत: परमात्मा एक वृद्ध, अनुभवी तन में दिव्य प्रवेश करते हैं और उसके द्वारा तुरन्त ही ज्ञान-योग की शिक्षा देने लगते हैं।

अमृत-सूची

- आध्यात्मिक ज्ञान लेने का उचित समय *(सम्पादकीय)* 6
- मनाना शिवरात्रि *(कविता)* 8
- 'पत्र' संपादक के नाम 9
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी ...10
- ईश्वरीय कारोबार में 12
- श्रद्धांजलि 15
- स्वाहा *(कविता)* 15
- नारी तुझे सलाम 16
- लेखकों से निवेदन.....17
- चिंता नहीं, समाधानकारी.....18
- हर समय ईश्वरीय संग 20
- बीमारी से डरना नहीं 21
- संस्कार मिलन की महारास ..22
- ज़िन्दगी 24
- कर्मभोग के समय.....25
- दर्द में भी दुख नहीं.....26
- स्वर्णिम गौरव 27
- प्यार : एक अनुभव 29
- सचित्र सेवा समाचार 30
- ईमानदारी ने कराया.....32
- इच्छा मात्रम् अविद्या.....33
- जीना अभी आया 34

फार्म – 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. **प्रकाशन** : ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)-307510
2. **प्रकाशनावधि** : मासिक
3. **मुद्रक का नाम** : ब्र.कु. आत्म प्रकाश क्या भारत का नागरिक है? हाँ पता – उपरोक्त
4. **प्रकाशक का नाम** : ब्र.कु. आत्म प्रकाश क्या भारत का नागरिक है? हाँ पता – उपरोक्त
5. **सम्पादक का नाम** : ब्र.कु. आत्म प्रकाश क्या भारत का नागरिक है? हाँ पता – उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय

मैं, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्म प्रकाश)
सम्पादक

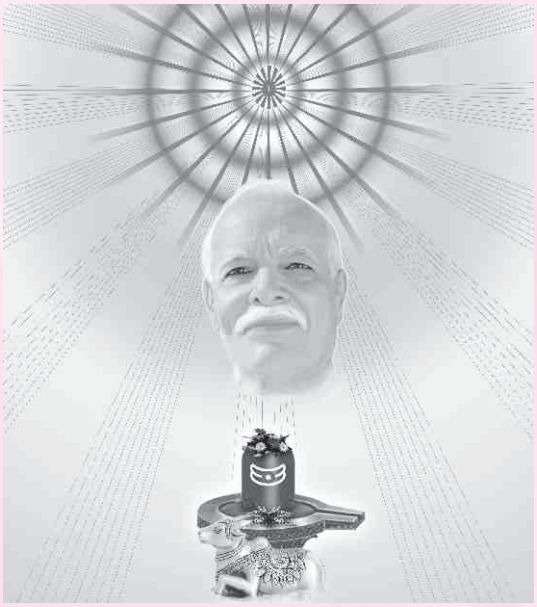

प्रजापिता बनते हैं परमपिता के नन्दीगण

निराकार परमात्मा शिव त्रिकालदर्शी हैं। वे सर्व आत्माओं की जन्मपत्री को जानते हैं। उन्हें पता है कि कौन मनुष्यात्मा उनका वाहन बन सकती है। सर्व जीवात्माओं में प्रजापिता ब्रह्मा में ही सर्वस्व समर्पण करने की अपूर्व क्षमता है। तभी तो शिवालयों में निराकार परमात्मा शिव के साथ उनके वाहन नन्दीगण की भी प्रतिमा स्थापित की जाती है। ज्ञानदाता या तो ज्ञान सागर परम-आत्मा शिव को कहते हैं या प्रजापिता ब्रह्मा को। अवश्य ही दोनों में कुछ अभिन्न सम्बन्ध होगा। प्रजापिता ब्रह्मा को सदा वृद्ध दिखाते हैं। क्या कोई वृद्ध रूप में उत्पन्न हो सकता है? कदापि नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा का शरीर भी बच्चे के रूप में ही पैदा हुआ था लेकिन वानप्रस्थ अवस्था के पूर्व वे एक साधारण मनुष्य थे। वृद्धावस्था में परमपिता निराकार परमात्मा शिव उन्हें अपना रथ नन्दीगण बनाते हैं और उन्हें 'प्रजापिता ब्रह्मा' की उच्चतम उपाधि देते हैं। निराकार परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के साकार तन द्वारा प्राय:लोप गीता-ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे पतित, तमोप्रधान, कलियुगी सृष्टि की जगह पावन, सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि की पुनर्स्थापना कराते हैं। अत: परमपिता परमात्मा के साथ प्रजापिता ब्रह्मा को भी नई दैवी सृष्टि का रचयिता कहा जाता है।

'रात्रि' शब्द का गूढ़ रहस्य

अन्य सभी जन्मोत्सव दिन में मनाये जाते हैं पर परमात्मा शिव का जन्मोत्सव रात्रि में – इसका गूढ़ आध्यात्मिक रहस्य है। रात्रि अज्ञान-अन्धकार का प्रतीक है। कलियुग के अन्त में जब सृष्टि पर घोर अज्ञान-अन्धकार छा जाता है तब ज्ञान-सूर्य परमात्मा अवतरित होकर चतुर्दिक् ज्ञान प्रकाश बिखेर देते हैं तथा सतयुगी सृष्टि की पुनर्स्थापना कराते हैं। अत: परमात्मा का अवतरण रात्रि में मनाया जाता है। वह भी कृष्ण पक्ष की घोर अन्धियारी रात्रि में। भारतवर्ष के प्राय: सभी प्रमुख त्योहार शुक्ल पक्ष में मनाये जाते हैं। कृष्ण पक्ष में केवल तीन त्योहार हैं – शिवरात्रि, जन्माष्टमी, दीपावली।

जन्मोत्सव और विवाहोत्सव एक ही है

कुछ लोग शिवरात्रि को परमात्मा का जन्मोत्सव न मानकर विवाहोत्सव मानते हैं। निराकार का विवाह कैसा? निराकार परमात्मा की प्रियतमा भी निराकार आत्मा ही होगी। फिर उनकी एक प्रियतमा कैसे हो सकती है? वे तो प्रेम के सागर हैं। सर्व आत्माओं पर उनकी सम-दृष्टि है। वास्तव में परम प्रियतम एक परमात्मा ही हैं और सर्व आत्माएं उनकी प्रियतमायें हैं। उस एक साजन की सभी सजनियाँ हैं। उस एक शिव की सभी पार्वतियाँ हैं। उनका अवतरण होता ही है सभी आत्मा रूपी पार्वतियों का शृंगार कर वापस मुक्ति-जीवनमुक्ति में ले जाने के लिए। जो शरीर भाव से ऊपर उठ अपने को निराकार आत्मा समझ उस निराकार परमात्मा से अपनी सगाई करते हैं, विकारों रूपी कालिमा से अपने को स्वच्छ करते हैं, दैवी गुणों से अपना शृंगार करते हैं तथा निरन्तर उस पतित पावन

परम प्रियतम की याद में रहते हैं, वे ही पावन, सतोप्रधान, सर्व गुण सम्पन्न बन इस जीवन में सौ प्रतिशत पवित्रता, सुख, शान्ति की प्राप्ति करते हैं तथा भविष्य सतयुगी सृष्टि में नर से श्री नारायण तथा नारी से श्री लक्ष्मी पद की प्राप्ति करते हैं। वे आत्मायें धन्य हैं जो स्वयं निराकार बन निराकार परमात्मा शिव से दिव्य विवाह करती हैं। इस लोकोत्तर, अलौकिक विवाह का ही तो गायन है। वास्तव में परमात्मा का जन्मोत्सव और विवाहोत्सव एक ही है क्योंकि उनका अवतरण होता ही है आत्माओं का शृंगार कर अपने साथ सम्बन्ध जुटाने के लिए।

अक-धतूरा अर्थात् पाँच विकार

देवताओं पर सुगन्धित पुष्प चढ़ाये जाते हैं लेकिन परमात्मा शिव पर अक-धतूरा। कल्पान्त में जब परमात्मा अवतरित होते हैं उस समय सर्व आत्मायें विकारों के वशीभूत होकर तमोप्रधान हो जाती हैं। उन्हें फिर से पावन बनाने के लिए पतित पावन परमात्मा आदेश देते हैं कि मुझ पर काम-क्रोधादि पंच विकारों की बलि चढ़ा दो। इस तरह परमात्मा को पंच विकारों का दान देकर नर-नारी पतित से पावन बन जाते हैं। इसी महान कृत्य के प्रतीक रूप में परमात्मा शिव पर अक-धतूरा ही चढ़ाया जाता है। भक्ति मार्ग में बलि या तो शिव पर चढ़ाते हैं या काली पर। देवताओं पर बलि चढ़ाने की प्रथा नहीं है।

माया की नींद से जागरण

शिवरात्रि पर भक्त लोग रात्रि जागरण करते हैं। ज्ञान-सूर्य परमात्मा आकर अज्ञान-अन्धकार में सोई आत्माओं को जगाते हैं। वे ज्ञान का प्रकाश फैलाकर माया की मादक नींद में सोई आत्माओं को झकझोरते हैं तथा विकारों से जागरण का आदेश देते हैं। परमपिता परमात्मा की आज्ञाकारी सन्तान उनके आदेश पर विकारों को त्याग, पावन बन, पावन सतोप्रधान सतयुगी दुनिया की मालिक बन जाती हैं। इसी उपलक्ष्य में शिवरात्रि को लोग रात्रि-

जागरण करते हैं।

बेलपत्र क्यों?

निराकार परमात्मा शिव त्रिमूर्ति हैं। वे स्थापना, पालना और विनाश के दिव्य कर्त्तव्यों के लिए तीन देवताओं की रचना करते हैं। वे ब्रह्मा द्वारा सतोप्रधान दैवी सतयुगी सृष्टि की स्थापना कराते, शंकर द्वारा तमोप्रधान आसुरी कलियुगी सृष्टि का विनाश कराते तथा विष्णु द्वारा पावन सतयुगी, त्रेतायुगी सृष्टि का पालन कराते हैं। इसीलिए उन्हें करन-करावनहार स्वामी के रूप में गाया जाता है। त्रिमूर्ति परमात्मा शिव की दिव्य-जयन्ती पर भक्त-गण उन पर बेलपत्र चढ़ाते हैं जिनमें तीन पत्र होते हैं। लगता है कि प्रकृति ने त्रिमूर्ति परमात्मा की स्मृति में ही तीन पत्तों वाले बेलपत्र की रचना की है।

सचमुच शिवरात्रि का दिव्य त्योहार गूढ़ रहस्यों से भरा पड़ा है। जो इन रहस्यों को जान लेते हैं वे रचयिता परमात्मा शिव तथा उनकी रचना सृष्टि के आदि, मध्य और अन्त को भी जान लेते हैं। शिवरात्रि के स्थूल विधि-विधानों में गूढ़ आध्यात्मिक रहस्य छिपा है जिसे स्वयं परमात्मा शिव अवतरित होकर स्पष्ट कर रहे हैं। आइये, इन आध्यात्मिक रहस्यों को हृदयंगम कर हम भी सच्ची रीति से शिवरात्रि मनायें और स्वयं पावन बन इस देवभूमि भारतवर्ष में पावन रामराज्य की पुनर्स्थापना के महानतम् कर्त्तव्य में, पतित पावन परमपिता परमात्मा शिव के पूर्ण सहयोगी बनें।

❖

आध्यात्मिक ज्ञान लेने का उचित समय

एक विद्यालय में एक नौजवान, शिक्षक के पद पर नियुक्त होता है। उसके विद्यार्थी अपने स्वभावानुसार कभी कक्षा में शोर करने लगते हैं और कभी पढ़ाई में एकाग्र नहीं हो पाते हैं। कभी कोई विद्यार्थी कक्षा में लेट आता है और कभी कोई गृहकार्य नहीं करके लाता। इस प्रकार की बातें उस शिक्षक को बेचैन करती हैं। कभी तो वह अपने पर इतना नियन्त्रण खो बैठता है कि विद्यार्थी पर अपशब्दों की, कटु शब्दों की, अपमानजनक शब्दों की बौछार कर बैठता है। चूँकि अब शारीरिक सज़ा की मनाही है इसलिए वह अपने क्रोध और चिड़चिड़ेपन को मानसिक प्रताड़ना के रूप में प्रकट करता है। उसके अपने मन में कभी अशान्ति, कभी घृणा, कभी निराशा और कभी थकावट के उद्वेग आते रहते हैं। इस प्रकार की स्थितियों को सहते-सहते वह सेवानिवृत्त हो जाता है और एक आध्यात्मिक सत्संग में शामिल होने लगता है। वहाँ के प्रवचनों में सुनाया जाता है कि 'व्यक्ति को प्रतिकूल व्यवहार को शान्ति और शुभ भावना से जीत लेना चाहिए। अवांछित हरकतों को देखते, सहते भी मन की स्थिरता और चैन को बनाए रखना चाहिए। कार्य-व्यवहार के दौरान अपनी वाणी को मीठा और शालीन बनाए रखना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में वाणी का संयम नहीं खोना चाहिए।'

प्रवचन के साथ आचरण की शिक्षा

विचारणीय प्रश्न है कि सेवानिवृत्त होकर वह शिक्षक इस प्रवचन का कहाँ उपयोग करेगा? न उसके सामने विद्यार्थी हैं और न ही ड्यूटी के दौरान आने वाली अन्य भिन्न-भिन्न विपरीत स्थितियाँ। क्या ही अच्छा होता, वो इस आध्यात्मिक सत्संग में अपनी उस नौजवान आयु में शामिल होता जब उसने शिक्षक का पदभार सम्भाला था। वह उन अबोध बालकों की चंचलता को स्नेह से, शुभभावना से, रहम से, कल्याण की भावना से, क्षमाभाव से सहता, समाता, उसका मार्गान्तिकरण करता। वह सही अर्थों में मास्टर (माँ जैसा स्तर धारण करके) बनकर मीठी वाणी, मीठे व्यवहार से उन विद्यार्थियों के दिल में स्थान बनाता। इस प्रकार उसकी कक्षाओं से गुज़रने वाले हज़ारों विद्यार्थी, प्रवचनों के साथ-साथ उससे आचरण की शिक्षा भी ग्रहण करते।

आध्यात्मिकता अर्थात् आत्मा के मूल स्वरूप को जानना

प्रश्न यह है कि आध्यात्मिक ज्ञान सीखने का सही समय कौन-सा है? क्या तब जब हम सामाजिक कार्यों में सक्रिय सहभागिता से अलग हो जाएँ? क्या सामाजिक-पारिवारिक कार्यों में आध्यात्मिक ज्ञान कहीं काम नहीं आता? आध्यात्मिकता को अंग्रेजी में कहते हैं Sprituality. इसका अर्थ है Spirit in reality अर्थात् आत्मा के मूल स्वरूप को जानना और उसमें टिकना। आत्मा का मूल स्वरूप है ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द और शक्ति। आत्मा का बिगड़ा हुआ अर्थात् विकृत स्वरूप है अज्ञान, काम, क्रोध, नफरत, निराशा, दुख और निर्बलता। क्या पारिवारिक, सामाजिक कार्यों में शान्त स्वरूप आत्मा, प्रेम स्वरूप आत्मा, आनन्द स्वरूप आत्मा, शक्ति स्वरूप आत्मा की कोई भूमिका नहीं? यदि क्रोध स्वरूप, काम (विकार) स्वरूप, लोभ स्वरूप, अहंकार स्वरूप होकर हम कार्यों में लगे रहते हैं तो परिवार और समाज का स्वरूप कैसा होगा? ज़िम्मेवारी वाले पद पर बैठकर हम क्रोध स्वरूप

होकर, अहंकार स्वरूप होकर, लोभ स्वरूप होकर कर्म करते हैं तो परिणाम क्या निकलेगा?

लापरवाही से कह दिया 'कल आना'

हम एक और उदाहरण लेते हैं। एक व्यक्ति की एक कार्यालय में एक अधिकारी के रूप में नियुक्ति हुई है। उससे ग्रामीण, शहरी, गरीब, अमीर सभी तरह के लोग कार्य करवाने आते हैं। एक ग्रामीण को उसके कार्यालय के बाहर 4 घण्टे गुज़र चुके हैं। साहब को इसकी सूचना भेजी जा चुकी है पर उसे बाहर ही ठहरा दिया गया है। प्रभावशाली लोग अपना काम पूरा करवाके लौटते जा रहे हैं। एक बार हिम्मत करके यह ग्रामीण अन्दर गया तो इसे डांटकर वापस बैठा दिया गया। आखिर कार्यालय बन्द होने का समय आ गया। साहब ने अपना बैग उठाया और बाहर बैठे ग्रामीण के आगे से गुज़रते हुए लापरवाही से कह दिया 'कल आना'। जब अगले दिन ग्रामीण फिर आया तो उसे पता पड़ा कि साहब तो छुट्टी पर हैं। उससे अगले दिन साहब किसी मीटिंग में थे। एक छोटे से हस्ताक्षर के लिए एक गरीब को कितने ही चक्कर लगाने पड़े, तब जाकर सफलता मिली। लोगों के साथ इस प्रकार का व्यवहार करते-करते यह अधिकारी भी सेवानिवृत्त हुआ और आध्यात्मिक प्रवचन सुनने लगा जिनमें कहा जा रहा है, 'व्यक्ति को पद पाकर नम्र बने रहना चाहिए, सबके साथ समदृष्टि रखकर न्यायपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। किसी के पद, पैसे, पोज़िशन के प्रभाव में न आकर अपने कर्त्तव्य का सही तरीके से निर्वाह करना चाहिए। अमीर, गरीब, छोटे, बड़े के भेद को न देख सबको आत्मा की दृष्टि से देखना चाहिए।'

लगन और शक्ति – दोनों चाहिएँ

विचार कीजिए, ये प्रवचन सुनने और धारण करने की सबसे ज्यादा आवश्यकता कब थी? जब वह पद पर आसीन था, जब वह लोगों के प्रति जवाबदेह था, जब वह अपने कार्यों के द्वारा लाखों को सुख-सुविधा और राहत देने के निमित्त था। आज जब उसके हाथ से सब अधिकार छूट चुके हैं तो अब वह नम्रता, न्याय, समदृष्टि को धारण कर भी ले तो अपने इन गुणों से कितनों का भला कर पाएगा? इससे 'जब बूढ़े होंगे तब ज्ञान सीखेंगे' इस बात का खोखलापन तो सिद्ध हो ही जाता है। बात केवल शिक्षक और अधिकारी की नहीं है। समाज के हर ज़िम्मेवार वर्ग पर यह बात लागू होती है, चाहे वे माता-पिता हों, व्यापारी हों, समाज सेवक हों, चिकित्सक हों, इन्जिनियर हों, मीडियाकर्मी हों...। अनेक लोगों के सम्पर्क में आने वाले, अनेक लोगों को सुख-सुविधा देने के निमित्त हर ज़िम्मेवार व्यक्ति में अपने व्यवहार को नियन्त्रित करने, उसे नैतिक और सुखदाई बनाने की लगन और शक्ति दोनों होनी चाहिएँ तभी हमारी सभी व्यवस्थाएँ बिना अवरोध चल पाएँगी।

राजयोग – मन को चार्ज करने की विधि

कोई यह भी कह सकता है कि अधिकारियों, शिक्षकों आदि को अपने व्यवहार को सुखदाई, मिलनसार, जवाबदेह बनाने के लिए अनेक प्रकार के ट्रेनिंग कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। यह सत्य है परन्तु अनुभव कहता है कि ज्ञान के द्वारा जो प्रेरणा मिलती है वह अल्पकाल तक रह पाती है। हमें यह ज्ञान होता है कि हमें क्या करना चाहिए पर हम चाहते हुए भी कर नहीं पाते क्योंकि आत्मा में शक्ति नहीं है। जैसे जब कोई व्यक्ति किसी देशभक्त की गाथा पढ़ता है तो अल्पकाल के लिए देशप्रेम का खून उसकी रगों में ठाठें मारने लगता है परन्तु जैसे ही वह पुस्तक बन्द करता है, देशप्रेम का प्रवाह क्रमशः मन्द पड़ता जाता है। ऐसी किसी भी उत्प्रेरणा को स्थाई बनाने के लिए आवश्यक है कि मन को परमात्मा से जोड़कर उसे निरन्तर

चार्ज होते रहने की सुविधा प्रदान की जाए। राजयोग मन को चार्ज करने की सर्वोत्तम विधि है।

सर्वशक्तियों का करंट

राजयोग में दो शब्द हैं, राज और योग। राज का अर्थ है राजा। आत्मा कर्मेन्द्रियों की राजा है। योग का अर्थ है जुड़ाव। आत्मा राजा जब भ्रकुटि सिंहासन पर विराजमान होकर पिता परमात्मा से कनेक्शन जोड़ती है तो परमात्मा पिता से सर्व शक्तियों का करंट उसमें प्रवाहित होने लगता है। इस करंट से उसके कमज़ोर और नकारात्मक संस्कार जल जाते हैं और परमात्मा पिता के शान्ति, आनन्द, प्रेम, पवित्रता, शक्ति के संस्कार उसमें भरने लगते हैं। जैसे शरीर में फैले कीटाणुओं के नष्ट होने से शरीर चुस्त, दुरुस्त और फुर्तीला हो जाता है उसी प्रकार नकारात्मक और दुखदाई संस्कार रूपी कीटाणुओं के जलने से आत्मा भी सुखदाई और कल्याणकारी बन जाती है। राजयोग के प्रतिदिन के अभ्यास से उमंग, उत्साह, कर्त्तव्यपरायणता, स्वच्छता, मितव्ययता, निस्वार्थता, सत्यता आदि गुण जीवन में स्वत: आते जाते हैं जिनके आधार से हमारा सामाजिक-परिवारिक सम्पर्क सुधरने लगता है।

ईश्वरीय ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान मानव को सोचने की कला सिखाता है। जब हमारी सोच सही हो जाती है तो हम अन्य सभी गुण और कलाओं में पारंगत हो जाते हैं। अच्छी सोच से अच्छी वाणी और अच्छा व्यवहार स्वत: बन जाता है। जब हमारी सोच, वाणी, व्यवहार अच्छे हो जाते हैं तो हम सबकी प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं। हमारा घर-परिवार हमारे कर्मों से लाभान्वित होता है। अत: इस भ्रान्ति को मन से निकालिए कि सेवानिवृत्ति के बाद ज्ञान लेंगे, इस विचार को दृढ़ कीजिए कि सेवा के दौरान ही ज्ञान लेंगे ताकि स्वयं तनाव रहित होकर तथा दूसरों को तनाव रहित रखते हुए सेवा कर सकें।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

मनाना शिवरात्रि इस तरह से

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली

अब की बार मनाना शिवरात्रि कुछ इस तरह से,
फिर देखना शिव प्रसन्न होते किस तरह से।
बुद्धि के कलश में भर के रूहानियत का ज्ञान-दूध,
शुभ भावों के सजा लेना फूल, तोड़ फेंकना नफरत के शूल।

परमपिता शिव की स्मृति की टपकाना बूँद-बूँद,
फिर देखना किस तरह होते आनन्द से फलीभूत।
लोटे चढ़ाने वाले, मंत्र पढ़ते हो तरह-तरह से,
अब की बार शिव को मनाना तुम इस तरह से।

करना धारण मौन व्रत, लेना सत्य का व्रत,
व्रत रखना पवित्रता का, बदले जो वृत्ति को वही होता व्रत।
मैं शुद्ध आत्मा हूँ, घोट-घोट के पी, इसी नशे में जी,
है सब नशों से बड़ा – नारायणी नशा ही।

रातों से ज्यादा काले दिन, संकल्पों के चूहे कुतर रहे खुशियों के पल,
कुकर्मों के ताण्डव नर्तन हो रहे प्रतिक्षण, प्रतिपल।
अब जगाने आए हैं शिव, रात्रि नहीं, है अवतरण दिवस,
दिन में कर्मों का जागरण ज़रूरी है, आगामी सुबह से हो अवगत।

चढ़ा दे अपने भीतर के ''अक'', बदल परम्परा से,
अब की बार मनाना शिवरात्रि कुछ इस तरह से।
नहीं है शंकररात्रि यह, है शिवरात्रि, ले काम समझ से,
फिर देखना मिटता अंधकार किस तरह से।
अब की बार मनाना शिवरात्रि कुछ इस तरह से।।

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत का हर लेख ज्ञान में बहुत वृद्धि करता है। बाबा के साथ के अनुभव के लेख जब-जब पढ़ता हूँ, रोम-रोम में खुशी और आँखों में आँसू छलक आते हैं कि बाबा कैसे सभी बच्चों का इतना ज्यादा ध्यान रखते हैं कि किसी को ज़रा भी तकलीफ ना पहुँचे।

– जेठमल पुखराज मुथा, पुणे

'ज्ञानामृत' ज्ञान खज़ानों से सराबोर कर लाभान्वित करती है। प्रत्येक पृष्ठ के नीचे दिए गए अनमोल सुवाक्य, जीवन-मूल्यों की समझ देते हैं। दादी जी के उत्तर जीवन को सरल बनाते हैं। पत्रिका पढ़ने मात्र से आत्मा के दिए जल उठते हैं, सद्गुण जीवन में आने लगते हैं, विचार स्वच्छ व निर्मल होने लगते हैं। आत्मविश्वास, तनावमुक्ति, सकरात्मक चिंतन, अतीन्द्रिय सुख, बाबा की याद – ये सब बातें शांत व सुखमय जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं।

– पल्लवी रवि वैष्णव, गाजियाबाद

घर बैठे अपना लोक-परलोक सुधारना हो तो 'ज्ञानामृत' अवश्यमेव खरीद कर ही पढ़नी चाहिए ताकि पता चले क्रेता को कि इस महंगाई में भी 'आध्यात्मिक शक्ति' की शिक्षा कितनी सस्ती है और परमपिता शिव के ज्ञानयज्ञ में निमित्त साधनारत भाई-बहनें कितनी महान सेवा से विश्व को पलटाने का अथक परिश्रम कर रहे हैं। विशेषत: 'दुख-सुख है कर्मजन्य' 'ईश्वरीय कारोबार में आदर्श...' 'सार्वभौमिक बन्धुत्व का आधार मित्रता' और 'परमात्मा परम शिक्षक के रूप में' मुद्रित लेखों की तेजस्विता ने इस पाठक को बागबाग कर दिया।

– शम्भू प्रसाद शर्मा, सोडाला, जयपुर

दिसंबर, 2014 में 'जीवन रक्षक बैज', 'जब बाबा ऑटो में साथ बैठ गये', 'विकार का अनछुआ आपरेशन', 'तबादला रद्द हो गया' आदि लेख बाबा के बहुत समीप लाने वाले हैं। प्राय: ज्ञानामृत के हर अंक के लेख सराहनीय होते हैं लेकिन इस अंक (दिसंबर 2014) का बाहरी रूप भी रंगीन बनाकर आपने सोने पर सुहागा कर दिया है।

– ब्रह्माकुमार रघुबीर, जालन्धर

मैं जब से 'ज्ञानामृत' मासिक पत्रिका का सदस्य बना तब से मेरे समस्त परिवार की दिनचर्या प्रभावित हुई है तथा सुख-शान्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। सार्वभौमिक 'ज्ञानामृत' पत्रिका ज्ञान प्राप्त कराने वाली अद्वितीय पत्रिका है। इससे आध्यात्मिक ज्ञान में आश्चर्यजनक वृद्धि होती है तथा पाठकों का जीवन सुखमय बन जाता है। प्रतिदिन होने वाली त्रुटियों में सुधार होता है। जीवन की उदासी, आलस्य दूर करने की अचूक औषधि है यह पत्रिका तथा मानव व्यवहार का पाठ पढ़ाती है। इसके पढ़ने, मनन करने से अभूतपूर्व परिवर्तन होता है। इसके अध्ययन से बाबा का कथन 'कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो' सार्थक होता है और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। इसके लेख अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरक हैं। इस पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ के अंत में मुद्रित किए गये सद्वाक्य-उद्धरण अत्यंत प्रेरक हैं।

– डॉ.रामस्वरूप गुप्त,
मैगलगंज (उ.प्र.)

अक्टूबर, 2014 की ज्ञानामृत पत्रिका हाथों में आई, विधिवत् अध्ययन किया। सम्पादकीय लेख ''निर्विघ्न जीवन'' पर विचारता ही रह गया। वास्तव में विघ्न आता है मानव को जगाने के लिए, उसमें साहस, हिम्मत एवं सजगता पैदा करने के लिए। लेख में निर्विघ्न जीवन जीने का एक विशुद्ध नुस्खा बताया गया है। यह पत्रिका ज्ञान प्रसार के साथ-साथ मानव के आत्मबल को भी बढ़ाती है जिसके परिणामस्वरूप जीवन सुदृढ़ बनता है।

– अतर सिंह, सूरजपुर, अलीगढ़

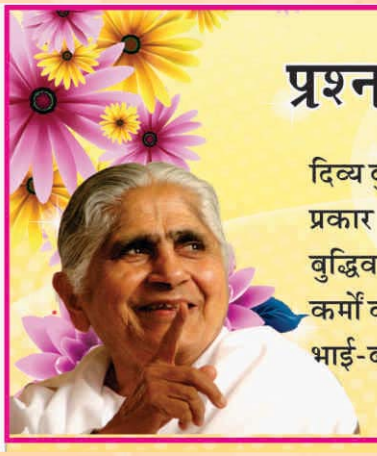

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- आपकी आश क्या है?

उत्तरः- अब आप सभी मेरी एक आश अवश्य पूरी करो। मेरी आश है कि सभी मन की रास करें, मन में एक-दूसरे के प्रति जो दूरियाँ आ गई हैं, उन सभी को मिटाएँ। अब न किसी से कोई मनमुटाव हो, न किसी के प्रति झुकाव हो। मन से कभी डिस्टर्ब न हों। मन से सभी को रिगार्ड दें। मन को निर्मल और निश्छल बना कर, मनमनाभव बन जाएँ। मनजीत ही जगतजीत है। मन साफ होगा तो व्यवहार में प्यार भर जायेगा। जब आपस में मन मिलेंगे तो स्थूल संस्कारों का मिलन भी सहज हो जायेगा। तन चाहे कितनी ही दूर क्यों न हो, मन से साथ दो, भावनाओं से साथ रहो, यही सच्ची मनसा सेवा है। बाबा ने मनसा सेवा करने वालों का ग्रुप तैयार करने के लिए कहा है। सबका मन मिलेगा तो मनसा सेवा सहज हो जायेगी। अब सब पुरानी और स्थूल बातों को फुलस्टॉप लगाओ, बाबा का सच्चा सपूत बच्चा बन, अपनी श्रेष्ठ धारणा और सेवा का सबूत दो। भक्ति मार्ग में जब यज्ञ पूर्ण होता है तो सभी एक साथ खड़े होकर मंत्र उच्चारण करते हुए यज्ञ-कुण्ड में अन्तिम आहुति डालते हैं। हम सभी भी उसी प्रकार आपस में मिलकर महायज्ञ में अन्तिम आहुति डालने के लिए स्वयं को तैयार करें। रहे हुए विकारों के सूक्ष्म अंश और वंश को ज्ञान यज्ञ-कुण्ड में अन्तिम आहुति के रूप में डालें और बाबा के साथ वतन वापस जाने की तैयारी करें।

प्रश्नः-किस साल में विनाश होगा?

उत्तरः- यह बाबा बताते नहीं हैं पर तुम तैयार रहो, विनाश कभी भी हो सकता है।

प्रश्नः- विचार सागर मन्थन के क्या-क्या फायदे हैं?

उत्तरः- विचार सागर मंथन करना मुझे तो बहुत अच्छा लगता है, इससे बहुत फायदा है। सबसे बड़ा फायदा तो यह है कि और विचारों में लटकेंगे, अटकेंगे नहीं। सागर को मंथन करने से मोती मिलते हैं। ऊपर-ऊपर से करेंगे तो सिर्फ कौड़ियाँ ही मिलती हैं, वे भी सच्ची होती हैं। पैसा झूठा हो सकता है, नोट दूसरा हो सकता है लेकिन कौड़ी झूठी नहीं हो सकती है। शंख जो होता है वो सागर की रचना है इसलिए उसकी आवाज़ दूर-दूर तक गूँजती है। शान्त रहने से कुछ अच्छा माल मिलता है, वायब्रेशन मिल जाते हैं। सोचने से नहीं मिलता है इसलिए मैं अपने को इन सबसे फ्री रखती हूँ। मेरा दिल होता है, आप भी बार-बार फैमिली फीलिंग की मीटिंग करो क्योंकि परिवार प्यारा लगता है। विचार सागर मंथन करके प्रैक्टिकल जीवन के परिवर्तन से नवीनता का अनुभव करो। मेरे में नवीनता आयेगी तो औरों को प्रेरणा मिलेगी। यह गुप्त बात है। बाबा रहमदिल हैं, फ्राखदिल हैं उनका फायदा लो। विचार सागर मंथन जल्दी-जल्दी में नहीं होता है, विचार सागर मंथन करने से राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी, यह भी भाग्य है। इससे स्व सेवा और सर्व की सेवा होगी। अगर ज़रा भी मैं दुःख

महसूस करने वाली आत्मा हूँ, तो मैं दूसरे का दु:ख दूर नहीं कर सकती हूँ। लाइट रहने से औरों को लाइट अनुभव होगी, हल्कापन लगेगा। पाँच हों या 50 हों या 500 हों, बाबा की लाइट लाखों-करोड़ों को मिल रही है।

प्रश्न:- बीमारी में किस प्रकार के शुभ संकल्प करें?

उत्तर:- कोई बीमारी है तो आश्चर्य नहीं खाना है कि यह क्यों? यह हिसाब-किताब सतयुग में नहीं होगा। आयी है, पास हो जायेगी, अगर बीमारी को सोचते हैं तो बैठ जाती है, जाती नहीं है। कई हैं जो डाक्टर और दवाइयाँ बदलते रहते हैं, बहुत खर्चा करने के बाद भी कुछ नहीं होता है, पर कई हैं जो बीमारी को खुद ही भगा लेते हैं। बाबा को सर्जन के रूप में देखो, वो जाने उसका काम जाने, वह इंजेक्शन लगा करके अशरीरी बना देता है। कई हैं जो थोड़ा ब्लड प्रेशर हाई हुआ, परेशान हो जायेंगे। अरे, परेशान क्यों होते हो? प्रेशर परेशान होने से होता है। शान में रहने से नहीं होता है, यह नवीनता लाओ ना, क्या बड़ी बात है। एक-दो से सीखने की भावना हो तो कभी भी हमको तकलीफ नहीं होगी। न मेरे से किसी को तकलीफ हो, न मेरे को तकलीफ हो। किसी को मेरे से शान्ति-प्रेम भले मिलें, जितने मिलें उतने थोड़े पर मेरा एक शब्द या मेरा रहन-सहन किसी को तकलीफ न दे। यह पुण्य के खाते में जमा होगा। कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू हो जायेगा।

प्रश्न:- बातों को चित्त पर पकड़े रखने के क्या नुकसान हैं?

उत्तर:- जहाँ किचड़ा होता है वहाँ कीड़े पैदा हो जाते हैं। ऐसे ही थोड़ा भी हमारे अन्दर किचड़ा होगा तो बीमारी पैदा करेगा इसलिए स्थूल, सूक्ष्म, अन्दर, बाहर से सफाई रखो क्योंकि मैं कोई डस्टबिन नहीं हूँ। कोई भी किचड़ा है मन का या तन का वो इधर-उधर नहीं फेंको, यह भी ईश्वरीय कायदे हैं। ईश्वरीय कायदे प्रमाण चलो तो सब ठीक है। आजकल दुनिया में लव का दिवाला है, न लव देना जानते हैं, न लव लेना जानते हैं, वे कायदे पर क्या चलेंगे? लवफुल ही लॉफुल होते हैं। मैं शरीर छोड़ूं तो क्या याद करेंगे, थी तो अच्छी परन्तु... यह नहीं चाहिए, यह यादगार नहीं है। दातापन के संस्कार इमर्ज करके साथियों को स्नेह और सम्मान दो और अपने से आगे रखो। इसमें थोड़ी भी बॉडी-कॉन्सेस की नेचर खतरा है इसलिए छोड़ो तो छूटेंगे। कोई बात पकड़के रखेंगे तो फंसे रहेंगे फिर नुकसान किसको? कोई भी बात अगर पकड़के रखी तो कर्मबन्धन बढ़ गया। बाबा कहते हैं, तुम्हारा चुक्ता करने आया हूँ, मेरी याद में रहो तो जो भी कुछ गलत है वो अभी माफ कर दूँगा, पुराने पाप नाश भी कर दूँगा।

प्रश्न:- किसी को उदास देखें तो क्या करें?

उत्तर:- साकार में बाबा कहते थे, जो उदास होते हैं वो दास-दासी बनेंगे। बाबा का कहना है, कुछ भी होता है तो ज्ञान का हलवा बनाओ, अच्छी तरह से खाओ और खिलाओ। मुसकराने से मुश्किल बात भी चली जाती है। मुसकराने से कोई बात मुश्किल नहीं लगती, सोच में नहीं पड़ते हैं। ऐसी स्थिति बनानी हो तो क्या करें! बहुत खबरदार रहना होगा, एक भी भूल न हो। बाबा के सुपात्र बच्चे जो आज्ञाकारी नम्बरवन हैं, जो भी बाबा ने कहा, हाँ जी कहके किया। जब से बाबा के बने, न कहाँ चलायमान हुए हैं, न कहाँ डोलायमान हुए हैं, चलायमान होना भी अपवित्रता है, डोलायमान होना तो निश्चय की कमी है। बाबा के मुख से निकलता है, नथिंग न्यू, मम्मा के मुख से निकलता है, ड्रामा। कोई ने शरीर छोड़ा तो मम्मा कहेगी, ड्रामा। बाबा कहेंगे, नथिंग न्यू और क्या कहेंगे? प्रैक्टिकली करके दिखाया है। चलते फिरते किसको मुरझाया (उदास) हुआ देख पूछो नहीं, क्या हुआ है! पर मेरी मुसकराहट को देख वो भी मुसकराये। कहने का भाव है कि नाटक में ना अटको।

❖

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 16

➢ ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

वर्तमान शृंखला में हम दैवी दुनिया के कारोबार एवं संगमयुग के कारोबार के संबंध में चर्चा कर रहे हैं और उसमें भी खास मैनेजमेन्ट गुरुओं के विचारों पर भी चर्चा कर रहे हैं। परमात्मा शिव परमपिता, परम शिक्षक एवं परम सतगुरु भी हैं। परमात्मा, परमपिता के रूप में हम बच्चों को वर्सा देते हैं, जैसे एक राजा का बच्चा होता है उसे राजगद्दी वर्से के रूप में मिलती है उसी प्रकार परमात्मा से हमें 21 जन्मों के लिए निर्विघ्न रूप से बादशाही मिलती है। ऐसे ही शिवबाबा परम सतगुरु के रूप में हमें मुक्ति-जीवनमुक्ति का अर्थात् परमधाम घर वापिस जाने का तथा सतयुग में आने का रास्ता बताते हैं। शिक्षक के रूप में बाबा हम बच्चों को साकार मुरली तथा अव्यक्त मुरली द्वारा शिक्षा देते हैं जिसके आधार पर हम वर्तमान में आचरण करना सीखते हैं तथा भविष्य सतयुग-त्रेतायुग के श्रेष्ठ संस्कार धारण करते हैं और ऊँच पद प्राप्त करते हैं।

परमात्मा शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा नई दुनिया की स्थापना करते हैं। उन्हीं के तन के आधार से वे हमें शिक्षा भी देते हैं। मेरी पहली मुलाकात में ही शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा एक आदर्श शिक्षक के रूप में शिक्षा देने का कार्य किया। सन् 1953 में ब्रह्मा बाबा का मुम्बई में ऑपरेशन हुआ था। तब मेरी लौकिक माताजी ज्ञान में चल रही थी। उन्हें ब्रह्मा बाबा से हॉस्पिटल में मिलने के लिए जाना था तो उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या आप मेरे साथ ब्रह्मा बाबा से मिलने हॉस्पिटल में चलोगे? मैंने तुरन्त हाँ कहा। ब्रह्मा बाबा से जब मिला तो मैंने उनसे पूछा कि आपका ऑपरेशन हुआ है? तो बाबा ने कहा, नहीं। मैंने दुबारा बाबा से पूछा कि क्या आपका ऑपरेशन हुआ है? फिर से बाबा ने कहा, नहीं। मैंने अपनी माताजी से कहा कि आपने तो कहा था कि बाबा का ऑपरेशन हुआ है परंतु बाबा तो मना कर रहे हैं, ऐसा क्यों? तब बाबा ने मुझे ज्ञान का पहला पाठ पढ़ाया कि ऑपरेशन मेरे शरीर का हुआ है, मेरा नहीं अर्थात् मैं आत्मा अजर, अमर, अविनाशी हूँ, मुझे कोई मार, काट या जला नहीं सकता है। आत्मा और शरीर दोनों अलग हैं। इस प्रकार बाबा ने मुझे एक घंटे तक आत्मा और शरीर या मैं आत्मा और मेरा शरीर इस विषय पर समझाया और शिक्षा दी।

दूसरी शिक्षा मुझे बाबा से सन् 1957 में मिली। तब ब्रह्मा बाबा मुम्बई आये थे। मैं रोज सुबह बाबा के साथ हैंगिंग गार्डन में वॉकिंग के लिए जाता था। उस गार्डन में एक दिन एक परिवार सामने से आया। उस परिवार की माताजी के एक पैर में 6 उंगलियाँ थीं। मैंने बाबा को कहा कि देखो बाबा, इस माताजी को 6 उंगलियाँ हैं। बाबा ने मुझे दूसरी शिक्षा दी कि बच्चे, मैं सबको आत्मा देखता हूँ और आत्मा ही देखने के लिए कहता हूँ। आपने अंगुली देखी अर्थात् शरीर को देखा, हमें शरीर को नहीं परंतु आत्मा को देखना है।

बाद में कानून की बातों के बारे में भी बाबा ने मुझे अनेकानेक शिक्षायें दीं। मैंने बाबा को कहा था कि बाबा हमारी कोई एक संस्था होनी चाहिए जिसके नाम पर हम अचल सम्पत्ति खरीद सकें। उस अनुसार दिनांक 28-11-1968 को मुम्बई के डिप्टी चैरिटी कमिश्नर ऑफिस में तथा बाद में दिनांक 16-1-1969 को सब-रजिस्ट्रार कार्यालय, मुम्बई में वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट रजिस्टर्ड हुआ। बाबा ने मुझे उस ट्रस्ट का मैनेजिंग ट्रस्टी नियुक्त किया। मैंने

बाबा को कहा कि बाबा मुझे ट्रस्ट चलाने का अनुभव नहीं है तो बाबा ने कहा कि आप निमित्त बनकर कार्य करते चलो, बाबा आपको समय-प्रति-समय सिखाते रहेंगे।

बाबा ने मुझे यज्ञ कारोबार के बारे में शिक्षा दी कि बच्चे, कारोबार में जब भी कोई समस्या आये तो बाबा की याद में बैठना और 5000 वर्ष पूर्व की अपनी स्मृति को इमर्ज करना कि कैसे उस समय यह समस्या हल की थी। शिवबाबा की शिक्षा मिलने के पश्चात् मैंने कई बार यह प्रयोग किया और मुझे उसमें सदा ही सफलता मिली। कारोबार करते हुए कई प्रकार की समस्यायें आती हैं तो परमशिक्षक से मिली शिक्षाओं के कारण उनका हल मिल जाता है। इसके बारे में मैंने ज्ञानामृत में कई बातें लिखी हैं। यह 5000 वर्ष पूर्व की स्मृति या संस्कारों को इमर्ज करना हमारे लिये सहज है क्योंकि हमारे पास परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है कि हम आत्माओं में पूरे 84 जन्मों का पार्ट रिकॉर्ड है, उसे अभी हमें सिर्फ प्ले करना है। जैसे कम्प्यूटर की सी.डी. होती है, वह एक रिकॉर्ड है जो घूमता रहता है और उसमें भरी हुई बातें जितनी बार चलाओगे वे रिपीट होती रहेंगी। ऐसे ही हम आत्माओं में भी अविनाशी पार्ट भरा हुआ है उसके लिए सिर्फ हमें समय की सूई के साथ बुद्धि का तार जोड़ना होता है जिससे हम अपने पिछले कल्प के संस्कारों को इमर्ज कर सकेंगे। योग द्वारा हमारी बुद्धि स्वच्छ होती है जिससे हम उन संस्कारों को इमर्ज कर समस्या में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

मुझे यज्ञ के लिए ज़मीन, मकान आदि खरीदने का कारोबार करना होता है, इसे करने से पहले बाबा को यही कहता हूँ कि बाबा मैं ज़मीन/मकान का आदि-मध्य-अन्त कुछ भी नहीं जानता हूँ, केवल पत्र द्वारा ही कारोबार होता है इसलिए आप यह कारोबार करना क्योंकि इस ज़मीन/मकान को मैंने देखा नहीं है, केवल कागज़ पर जो है, उस अनुसार ही मुझे निर्णय करना है। आपने मुझे यह सेवा दी है इसलिए कर रहा हूँ। अगर इसमें कोई गलती होगी तो आप मुझे कोई दण्ड नहीं देना। इस प्रकार बाबा से बात करके तथा बाबा को याद करते हुए अपने 5000 वर्ष पूर्व के संस्कारों को इमर्ज कर मैं कार्य करता हूँ। परिणामस्वरूप अभी तक यज्ञ के ज़मीन/मकानों की खरीद-फरोख्त में सफलता ही मिली है और कोई बड़ी कानूनी समस्या नहीं आई है।

पाँच हज़ार वर्ष पूर्व के संस्कारों को इमर्ज करने के संदर्भ में एक और अनुभव मैं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ – हांगकांग में अपने विश्व विद्यालय को वहां के कानून के अनुसार रजिस्टर्ड करना था। आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे कहा कि आप इस कार्य के लिए हांगकांग जाओ। वहां के भाई-बहनों ने वहां के एक नामीग्रामी सॉलिसिटर (solicitor) को इस कार्य के लिए नियुक्त किया था। मैंने रातभर हवाई जहाज में सफर किया और सुबह 11 बजे तक हांगकांग पहुँच गया। उसी दिन शाम को 5 बजे उस सॉलिसिटर से Appointment मिला था, उस अनुसार शाम को हम उनके पास गये। उन्होंने रजिस्ट्रेशन के कागज़ तैयार करके रखे थे और हमारी बहनों को उस पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा। मैंने उन्हें कहा कि आपने जो कागज़ बनाये हुए हैं, मुझे एक बार पढ़ने हैं। यह सुनकर उन्हें बुरा लगा और उन्होंने अभिमानवश मुझसे पूछा कि पढ़कर आप क्या करोगे? मैंने उन्हें कहा कि मैं हांगकांग के कानूनों को पढ़कर सीखने का प्रयत्न करूंगा। फिर उन्होंने वे पेपर्स मुझे दे दिये और अगले दिन सुबह 9.30 बजे आने के लिए कहा। हम सेन्टर पर वापिस आये और रात को भोजन करके सो गये। सुबह मैंने क्लास कराया और फिर मैंने अपने 5000 वर्ष पूर्व के संस्कार को इमर्ज करके वे पेपर्स पढ़े और जहां-जहां मुझे गलती लगी उस जगह पर निशान बनाये। सुबह जब हम उनसे मिले तो उन्होंने अभिमानवश

मुझसे कहा कि आपने तो बहुत कुछ सीखा और समझा होगा। मैंने उन्हें कहा कि कुछ बातें मुझे समझ में नहीं आईं इसलिए मैंने वहां पर निशान लगाये हैं। क्या मैं वे बातें आपसे पूछ सकता हूँ? मेरे पूछने के बाद उन्होंने वे कागज़ पढ़े और पढ़कर उन्हें समझ में आया कि बहुत से स्थानों पर उनसे गलतियाँ हुई हैं। उस अनुसार सॉलिसिटर ने कहा कि मैं शाम को कागज़ तैयार रखूँगा, आप शाम 5.30 बजे आना और अपने कागज़ लेकर जाना।

उसी शाम को जब हम उनसे विदाई ले रहे थे तो उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर कहा कि आप तो हांगकांग के कानून को जानते नहीं हो, आप कल ही यहां आये और आज सुबह ही इसको पढ़ा तो भी आपने मेरी इतनी (32) गलतियाँ कैसे निकालीं? मैंने उन्हें बताया कि यह परमात्मा की शक्ति है। मुझे उन्हें याद करके अपने 5000 वर्ष पूर्व के संस्कारों को इमर्ज करके वर्तमान का कार्य करने का जो ज्ञान उनसे प्राप्त हुआ है उसी विधि से मैंने यह कार्य किया। इसमें मेरा कोई पुरुषार्थ नहीं है परंतु परमात्मा परमशिक्षक ने मुझे जो ज्ञान दिया, उसे मैंने प्रयोग किया। मेरी बात सुनकर वह सॉलिसिटर दंग रह गया।

वास्तविकता भी यही है कि आत्मा में 5000 वर्ष का पार्ट, संस्कार भरे हुये हैं, उन्हें सिर्फ इमर्ज करना है। यज्ञ कारोबार में अनेक प्रकार की समस्यायें आती हैं। पहले तो हम हर बात के लिए संदेशपुत्रियों द्वारा शिवबाबा से संदेश लेते थे या डायरेक्ट ब्रह्मा बाबा से श्रीमत लेते थे। परंतु अभी तो यज्ञ का कारोबार बहुत बढ़ गया है और हर बात के लिए शिवबाबा को संदेश भेजना कठिन हो गया है तथा अव्यक्त बापदादा भी जब सम्मुख में आते हैं तो थोड़े समय के लिए ही आते हैं और वह समय मिलन के लिए ही होता है। इसलिए हर बात या हर समस्या के लिए बाबा से श्रीमत लेना संभव नहीं हो पाता है। अत: परमशिक्षक शिवबाबा द्वारा बताई हुई इस विधि का प्रयोग करके ही निर्णय लेना पड़ता है। मैं अपने दैवी परिवार के बहन-भाइयों से यह अनुरोध करता हूँ कि वे भी अपने सेवाकेन्द्र पर विशेष योग के प्रयोग के आधार पर सभी को क्लासेज आदि करायें तथा भाई-बहनों को कैसे इस विधि को प्रैक्टिकल में लाकर समस्याओं का समाधान करना है, यह भी बतायें।

दुनियावी मैनेजमेन्ट गुरु तो केवल वर्तमान के लिए कार्य करते हैं। उन्हें सिर्फ वर्तमान के अनुकूल मैनेजमेन्ट सिखाना होता है परंतु हमारा शिवबाबा हमें वर्तमान संगमयुग तथा भविष्य 21 जन्मों का राजकारोबार चलाने के लिए मैनेजमेन्ट सिखाते हैं। परमात्मा हमें Master of Divine Administrator बनकर मैनेजमेन्ट सिखाते हैं। दुनियावी मैनेजमेन्ट गुरु केवल एक कालदर्शी हैं परंतु शिवबाबा त्रिकालदर्शी हैं।

योग के द्वारा अष्टशक्तियों की प्राप्ति होती है। एक विशेष शक्ति है निर्णय शक्ति। इसे हम 5000 वर्ष पूर्व की स्मृति व संस्कारों को इमर्ज करके बढ़ा सकते हैं तथा समस्या का हल कर सकते हैं। बाबा का ज्ञान केवल सैद्धान्तिक या लिखित रूप में नहीं परंतु व्यवहार में प्रयोग करने के लिए है। योग के प्रयोग द्वारा समस्या का समाधान करना है। संगमयुग में यह प्रैक्टिकल स्वरूप में होगा तो सतयुग में व्यवहारिक रूप में कर सकेंगे। अत: मेरा आप सबसे अनुरोध है कि आप सभी योग की नई-नई विधियों को अपने जीवन में प्रयोग करने का प्रयत्न करें और अपनी व्यक्तिगत तथा यज्ञ समस्याओं का समाधान करें। परमात्मा परमशिक्षक की शिक्षाओं को जीवन में धारण कर उसे सफल बनायें और दूसरों के लिए आदर्श बनें। मैनेजमेन्ट गुरु बनकर बाबा हमें और भी क्या-क्या शिक्षायें देते हैं यह मैं अगली लेखमाला में लिखूँगा। ❖

दृढ़ता सफलता की चाबी है

श्रद्धांजलि

मीठे-प्यारे बापदादा की अति लाडली, सर्व की स्नेही, अथक सेवाधारी, सर्व बड़ी दादियों व महारथियों के आशीर्वाद से पली, अनेकानेक सेवाकेन्द्रों की स्थापना के निमित्त बनी राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी पुष्पा बहन जी सन् 1971 से ईश्वरीय ज्ञान-योग की सेवा में समर्पित थी। पिछले 28 वर्षों से नीमच (म.प्र., राजस्थान जोन) में संभागीय संचालिका के रूप में सेवाएँ दे रही थी। आपकी प्रवचन की कला, मधुर वाणी और श्रेष्ठ रहन-सहन वाला जीवन अनेकों के लिए प्रेरणा स्रोत रहा तथा आपके आदर्श ब्रह्माकुमारी जीवन को देखकर ही केवल नीमच एवं संबन्धित सेवाकेन्द्रों से लगभग 20 कुमारियों ने अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में समर्पित किया।

दिनांक 19 दिसम्बर, 2014 को शाम 5.40 बजे आपने अपना पुराना चोला छोड़ बापदादा की गोद ले ली। ऐसी स्नेही, अथक सेवाधारी, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

बापदादा की अति स्नेही, अथक सेवाधारी, साकार मात-पिता के हस्तों से पली हुई मीठी विनोद बहन, मोदी नगर साबजोन की मुख्य संचालिका थी। सन् 1961 में आप ईश्वरीय ज्ञान में आईं और सन् 1965 में साकार ब्रह्मा बाबा के सम्मुख ईश्वरीय सेवाओं में समर्पित हुईं। अदम्य साहस, निष्ठा, विनम्रता, ईमानदारी से भरपूर आपका व्यक्तित्व चुंबकीय था। आप प्रेम की मूर्ति थी। आपके कुशल संचालन में 24 सेवाकेन्द्र स्थापित हुए, 35 बहनों और 3 भाइयों ने अपना जीवन ईश्वरीय सेवाओं में समर्पित किया। आपने ईश्वरीय सेवाओं अर्थ विदेश-यात्रा भी की। नवम्बर 28, 2014 को आप अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में समा गईं। ऐसी स्नेही, अथक सेवाधारी महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

स्वाहा

ब्रह्माकुमार अवनीश, दुबई

करो आप या नहीं करो पर स्वाहा सब कुछ होना है।
कर देना अच्छा होगा, ना करना पछताना है।।
काम नहीं कुछ आयेगा आप इसे लो जान।
देह सहित जल जायेगा भौतिकता का अभिमान।।
चकाचौंध की यह दुनिया हो जायेगी राख।
परमाणु के अणु करेंगे सारे सपने खाक।।
गगन चूमते ऊँचे भवन पल भर में ढह जायेंगे।
पुरातत्ववेत्ताओं को भी अवशेष नहीं मिल पायेंगे।।
आँसू के बदले आँखों से लहू-धार निकलकर आयेंगे।
यह उपमा भी छोटी है जितना कि पछतायेंगे।।
कटे, फटे, चीथड़े जिस्मों के धरती देंगे रंग।
वर्ण, धर्म, भाषाओं का ऐसा होगा जंग।।
पहले हाहाकार मचेगा फिर होगा जयजयकार।
एक तरफ खुशियाँ होंगी, एक तरफ चीत्कार।।
समझो आया कि आया भाई ऐसा वक्त।
नदी, समंदर, नालों में है बहने वाला रक्त।।
पर दुख की कोई बात नहीं, सुख के दिन आने वाले हैं।
जिन रूहों ने निज संस्कार श्रीमत पर ही ढाले हैं।।
सबकुछ तुम पा जाओगे जो कुछ भी है चाहा।
पर पहले करना होगा देहधर्म को स्वाहा।।

नारी तुझे सलाम

ब्रह्माकुमार प्रेम सैनी, डेराबस्सी (पंजाब)

सारा देश दीवाली की खुशियाँ मना रहा था, मिठाइयाँ बांटी जा रही थीं, आतिशबाजी चल रही थी, रोशनी जगमगा रही थी, ढोल बज रहे थे, भंगड़े पड़ रहे थे परन्तु एक घर ऐसा भी था जहाँ पर सन्नाटा छाया हुआ था। खुशी की जगह ग़म, रोशनी की जगह अन्धियारा। पूछने पर पता चला कि इस घर में आज लड़की पैदा हुई है। सारा परिवार शोकमुद्रा में था। पिता गहरी सोच में डूबा था, दादा-दादी किस्मत को कोस रहे थे। कोई कह रहा था, कर्मों का फल है तो कोई तकदीर का खेल बता रहा था।

हर बात में होता रहा छल

हे जग को पैदा करने वाली, तेरे पैदा होते ही तिरस्कार का पहाड़ तुझ पर टूट पड़ा था। हर कोई तुझे देख तो रहा था परन्तु नफरत भरी निगाहों से। इस घोर शोकाकुल माहौल में बस एक किरण प्यार की फूटी। जन्मदाती माँ ने ''मेरी प्यारी बच्ची'' कहकर तुझे अपने सीने से लगाकर दूध पिलाया। इसी प्यार के सदके तुम बढ़ने लगी। पिता की सोच प्यार में बदलने लगी, दादी-बाबा भी मुसकरा दिए जब तूने बा...बा... कहा। परिवार का दृष्टिकोण भी बदलने लगा तुम्हारी किलकारी की आवाज़ से परन्तु तुम क्या जानो कि ये बदलाव भी केवल दिखावा मात्र थे। नफरत तो तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार हो गई। स्कूल में जाने लगी तो भैया से कम प्यार मिला, भैया को हर चीज़ नई और तुम्हें पुरानी मिली। हर बात में तेरे साथ छल होता रहा। तुमने दसवीं पास की तो भैया को कालेज में भेज दिया गया और तुम्हें पढ़ाई से हटा दिया गया, बर्तन मांजने, चूल्हा-चौका करने का काम सौंप दिया गया। घर में छोटी-छोटी बातों पर डांट यहाँ तक कि कई बार तो मारपीट भी सहन करनी पड़ी। कहा जाता रहा कि तुम्हें तो पराये घर ही जाना है, कौन-सा यहाँ रहना है, कूड़ी का कूड़ा तो कूड़ी पर ही सजता है परन्तु तुमने यह सब सहन किया। सलाम करता हूँ तुम्हारी सहनशक्ति को!

टहनी काट दी गई पेड़ से

एक दिन बिना पूछे ही तुम्हारी मंगनी एक अनजान गाँव में, अनजान परिवार में, अनजान लड़के से कर दी गई। तुम फिर भी चुप रही। तुमसे पूछे बिना ही शादी की तैयारी भी होने लगी। आखिर एक दिन वह निर्दयी, मनहूस समय भी आया जब तुझ रोती-बिलखती को मुर्दों के समान उठाकर दूसरे की डोली में बैठा दिया गया। माता-पिता ने चार आँसू बहा दिये, वे भी केवल दिखावे के लिए और तुझे घर से, गाँव से और सखियों से हमेशा के लिए ऐसे दूर कर दिया गया जैसे पेड़ से टहनी काट दी जाती है। तूने कोई शिकवा नहीं किया। सलाम है तेरी कुर्बानी को!

वाह रे नकली भगवान!

जाते समय शिक्षा दी गई कि पति ही तेरा परमेश्वर है और उसका घर ही तेरा घर है, सदा उसकी आज्ञा में

रहना। डोली पहुँची एक अनजान जगह जहाँ घर, परिवार, गाँव सभी अपरिचित थे। सास माँ ने तेरा स्वागत किया क्योंकि उसे अपने बेटे के लिए एक दुल्हन चाहिये थी। जिस इन्सान को तू जानती नहीं कि वह कैसा है, कैसे विचार हैं, क्या करता है, उसे तूने भगवान मान कर अपना तन, मन सब समर्पण कर दिया। फिर क्या था, उस परमेश्वर की, उस भगवान की कृपा तुम पर बरसने लगी। तुम्हारी जन्म से बचाई हुई पवित्रता को, इज्जत को तार-तार कर दिया और जाने क्या-क्या कुकृत्य तुम्हारे साथ किये उस नकली भगवान ने। वाह रे भगवान, तूने तो भगवान के नाम को ही कलंकित कर दिया? वाह रे पति परमेश्वर, किसी का गला दबाया, किसी को जिन्दा जलाया, किसी को मार-पीट कर भूखा-प्यासा रखा, किसी के टुकड़े-टुकड़े करके बोरे में डाल दिये, किसी को घर से निकाल दिया, किसी को गली-गली नचाया, किसी को पंखे से लटका दिया, किसी को ज़हर दे दिया। भगवान कहलाने वाले निर्दयी, तुझे ऐसा करते समय एक बार भी लाज नहीं आई? तूने ज़रा भी नहीं सोचा कि जिसने तेरे लिए अपना सभी कुछ त्याग दिया, तेरा वंश चलाया, तेरे परिवार की सेवा की, उसके साथ तू यह क्या कर रहा है! धिक्कार है तुझ जैसे नकली भगवान पर! परन्तु हे नारी, तूने सब कुछ चुपचाप सहन कर लिया, ना कोई शिकवा, ना किसी से शिकायत। बार-बार सलाम है तेरी सहनशक्ति को तथा तेरी कुर्बानी को!

स्वर्ग की देवी बनाने आ पहुँचे भगवान

हे नारी, आज मैं तुझे एक बात बताता हूँ, ज़रा ध्यान से सुन..... तेरे सच्चे और असली भगवान, परमपिता शिव परमधाम से तेरे सभी दुख दूर करने के लिये, फिर से तुझे पवित्र बना स्वर्ग की देवी समान अम्बा, जगदम्बा, सरस्वती, दुर्गा, वैष्णवी, लक्ष्मी के रूप में सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनाने के लिए बुला रहे हैं। सुन, तेरे आस-पास कोई भी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का सेवाकेन्द्र है तो तू वहाँ जाकर उन्हें पहचान ले तथा उनका हाथ थाम ले। वे तुम्हें ऐसा सम्मान देंगे कि यह अत्याचारी, भ्रष्टाचारी, झूठा भगवान तेरी मूर्ति बनाकर, उसे सुन्दर मन्दिर में सजाकर 2500 वर्षों तक तेरी स्तुति करेगा, अपने किये हुए कुकृत्यों के लिए नाक रगड़ कर, रेंगता हुआ चलकर, रो-रोकर क्षमा याचना करेगा।

अभी नहीं तो कभी नहीं

हे त्याग और कुर्बानी की मूरत, क्षमा की देवी, उठ, उन शिवपिता परमात्मा को पहचान, जो तेरे द्वारा नई दुनिया की स्थापना करा रहे हैं। अरावली पर्वत पर परमपिता शिव परमात्मा नई सतयुगी सृष्टि का नवनिर्माण कर रहे हैं। अब देर मत कर, उठ और उस सच्चे पिता की सहयोगी बन तथा ''वन्दे मातरम्'' और ''भारत माता शक्ति अवतार'' का नारा बुलंद कर ताकि तेरा नाम नर के आगे 2500 वर्षों तक लगता रहे। जाते-जाते मेरी एक बात पल्ले बांधती जा, अगर बांध ली तो यह नर बार-बार तुझे सलाम करेगा। बात है, ''अभी नहीं, तो फिर कभी नहीं।'' ❖

लेखकों से निवेदन

- जीवन-अनुभव के लेखों को निमित्त शिक्षिका के हस्ताक्षर के साथ भेजें।
- लेख और कवितायें साफ-साफ लिखें। यदि टाइप कराके भेजना चाहें तो आप पोस्ट द्वारा या ई-मेल gyanamritpatrika@bkivv.org पर भेजें।
- अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता, फोन नंबर, ई-मेल, संबंधित सेवाकेन्द्र का नाम, जोन तथा टीचर का नाम भी अवश्य लिखें।
- जो भी रचना भेजें, उसकी एक कॉपी अपने पास अवश्य रखें।

चिंता नहीं, समाधानकारी चिंतन

➢ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

हरेक माता-पिता की यह हार्दिक इच्छा रहती है कि उनके बच्चे गुणवान, चरित्रवान, पदवान और धनवान बनें। परन्तु बच्चों को ऐसा बनाने के लिए उन्हें स्वयं भी कुछ पुरुषार्थ अवश्य करना पड़ता है। यूँ तो इतिहास में चाणक्य जैसे लोग भी हुए हैं जो माता-पिता का साया न होने के बावजूद, परिस्थितियों के थपेड़ों को सहते-सहते महान बन गए। पर ऐसे लोग अपवाद रूप में ही होते हैं। बच्चों की महानता पर माता-पिता के संस्कारों का असर अवश्य पड़ता ही है।

माँ की उदारता भरी सीख

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का बचपन बहुत गरीबी और अभावों में बीता। उनके पिता ठाकुरदासजी दो रुपये महीना नौकरी करके परिवार का गुज़ारा चलाते थे। एक बार उनके द्वार पर एक भिखारी आया। उसको याचना करते देख उनके हृदय में करुणा उमड़ी। उन्होंने अंदर जाकर अपनी माँ से कहा, ''माँ, उस भिखारी के लिए कुछ दे दो।'' माँ के पास उस समय कुछ भी न था सो उसने अपना कंगन उतारकर ईश्वरचंद्र के हाथ में रख दिया और कहा, ''जब तू बड़ा हो जाए तब दूसरा बनवा देना, अभी इसे बेचकर ज़रूरतमंद की सहायता कर दे।'' बात आई-गई हो गई। बड़े होने पर ईश्वरचंद्र अपनी पहली कमाई से माँ के लिए सोने का कंगन बनवाकर ले गए और बोले, ''माँ! आज मैंने बचपन का तेरा कर्ज़ उतार दिया।'' माँ बोली, ''बेटा! मेरा कर्ज़ तो उस दिन उतर जाएगा, जिस दिन किसी और याचक के लिए मुझे ये कंगन दोबारा नहीं उतारने पड़ेंगे।'' माँ की बात ईश्वरचंद्र विद्यासागर के हृदय में घर कर गई। उन्होंने प्रण लिया कि वो अपना जीवन दीन-दुखियों की सेवा करने और उनके कष्ट हरने में ही व्यतीत करेंगे। गरीब माँ ने ऐसी प्रेरणा दे डाली कि वे गरीबों के मसीहा बन गये। उन्होंने सोचा, याचकों से भरी दुनिया में एक की याचना मिटाने से क्या होगा? क्यों ना पूरा जीवन इस सेवा में लगा दिया जाए और उन्होंने आजीवन वैसा किया भी। बच्चों के हृदय में समाज में फैली बुराइयों को मिटाने की दृढ़ता भर देना आज के समय की मांग है, यही सामयिक पालना है।

बच्चे तुरन्त नकल करते हैं

मान लीजिए, पिताजी अपनी बात मनवाने के लिए माताजी पर गुस्सा करते हैं तो बच्चा इस बात को देखता है और सोचता है कि उसे भी अपनी बात मनवाने के लिए यही तरीका अपनाना है, इस प्रकार वह माता-पिता की अच्छी बातों के साथ-साथ उनकी बुराइयाँ भी सीख जाता है। कहा जाता है, नकल करने में बच्चे बन्दर समान होते हैं अर्थात् तुरन्त नकल करते हैं।

ऐसी चीज़ों को दहलीज से बाहर रखें

आजकल मीडिया द्वारा भी बहुत-सी बुराइयाँ बच्चों में घर कर जाती हैं। मान लीजिए, संचार के किसी भी माध्यम में एक सुन्दर नौजवान द्वारा तम्बाकू का धुँआ उड़ाने का दृश्य या चित्र रोज़ प्रस्तुत होता है। अब देखने वाले अबोध मन को वो आकर्षित कर ले और वो अबोध छिप-छिपकर उस चीज़ का प्रयोग करने लगे तो दोष किसका? हम उस अबोध को डाँटें, फटकारें, पीटें इससे अच्छा है, ऐसी चीज़ों को दहलीज से बाहर रखें अर्थात् घर में उनके प्रवेश पर अंकुश लगाएँ। कोई कह सकता है कि बच्चा घर के बाहर भी तो बुराई सीख सकता है। हाँ, सीख सकता है पर घर में यदि नैतिक, आध्यात्मिक वातावरण है तो इससे अबोध मन को शक्ति मिलती है और बाहर की बुराई को चुनौती दे सकता है। पर यदि बुराई घर में ही बेरोकटोक घुसती हो तो उसमें चुनौती

देने की शक्ति पैदा ही नहीं हो पाती। इसलिए बच्चों को किसी भी प्रकार की नकारात्मक आदतों जैसे तेज स्वर, अवज्ञा, कामचोरी, दैहिक आकर्षण, फिजूलखर्ची आदि से बचाने के लिए घर के वातावरण को काम, क्रोध, लोभ आदि बुराइयों से रहित आध्यात्मिक बनाइये ताकि बच्चों को सकारात्मक पालना मिल सके। इसके लिए ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा माता-पिता को बहुत मदद कर सकती है जो प्रत्येक ब्रह्माकुमारी केन्द्र पर निःशुल्क सिखाई जाती है।

ज्ञान-योग में लगाना है भटकते मन को

अधिकतर भाई-बहनें सोचते हैं कि हम तो घर-गृहस्थ के कार्यों में इतने व्यस्त रहते हैं कि हमें तो ईश्वरीय ज्ञान और योग के लिए समय ही नहीं है परन्तु भगवान शिव कहते हैं, अपने आवश्यक कार्यों को छोड़कर ज्ञान-योग का अभ्यास नहीं करना बल्कि आवश्यक कार्यों को करते समय मन जो अनावश्यक बातों में भटकता है, उस समय भटकते मन को ज्ञान-योग में लगाना है। अब देखिए, खाना बनाना अनिवार्य है परन्तु सब्जी काटते-काटते, रोटी बेलते-बेलते, सब्जी छोंकते-छोंकते भी मन में कई अनावश्यक बातें आ

जाती हैं और उनसे नुकसान भी हो जाता है। मान लो कोई महिला रोटी बेलते-बेलते सोच रही है कि यह बेलन तो मेरी माता ने मुझे लखनऊ से लाकर दिया था। मेरी माता आजकल बहुत बीमार है, छह मास से बेड रेस्ट पर है। डॉक्टर को बीमारी पकड़ में नहीं आ रही है, आजकल डॉक्टरों को भी पैसा चाहिए, बस, सेवा मन से नहीं करते, मैं अपने पुत्र को डॉक्टर बनाऊँगी पर वह तो पढ़ाई में मन लगाता ही नहीं है...। इस चिन्ताजनक विचार प्रवाह के कारण वह तवे पर पड़ी रोटी बदलना भूल जाती है। चूँकि यह चिन्ता मन पर हावी हो गई है इसलिए सारे दिन कर्म करते वह बार-बार, फिर-फिर इन्हीं विचारों को दोहराती रहेगी। एक होता है चिन्तन, दूसरी होती है चिन्ता। चिन्ता वाला संकल्प बार-बार उठता है, तनावग्रस्त करता है और घर के वातावरण को भारी करता है, खुशी और सेहत को छीनता है। इसके विपरीत, चिन्तन समाधान की ओर ले जाता है। चिन्तन के मालिक हम होते हैं परन्तु चिन्ता तो हमारी मालिक बन जाती है और सारे दिन अपने चाबुक से हमें चलाती रहती है। उसका चाबुक सहते-सहते हम अधमरे-से हो जाते हैं।

समाधानकारी चिन्तन

जब हम ईश्वरीय ज्ञान-सहज राजयोग सीख जाते हैं तो कर्म करते हुए, मनमनाभव हो सकते हैं और जब चाहें, जितनी देर चाहें एक आवश्यक कार्य में मन लगाकर फिर दूसरे में मन को लगा सकते हैं। उपरोक्त चिन्ता और दुख की परिस्थिति को साक्षी होकर देखते हुए चिन्तन कर सकते हैं कि मुझे अपनी माता के लिए शुभकामनाएँ करनी हैं, उसे शान्ति का दान देना है ताकि वह ठीक से आराम कर सके। परमात्मा पिता की दुआओं से उसके मन को सशक्त करना है ताकि शारीरिक कष्ट उस पर हावी न हो। डॉक्टर को भी मुझे शुभ वायब्रेशन देने हैं ताकि उसे भी सूक्ष्म बल मिले

और वह अपनी सेवा ठीक से करे। इस प्रकार हमारा चिन्तन समाधानकारी हो जाता है।

शान्ति-सुख-पवित्रता के वायब्रेशन

अपनी मनसा शक्ति को शान्ति, प्रेम, पवित्रता, स्नेह, शुभभावना की दिशा देना ही घर को आश्रम बनाना है। ऐसे घर में शान्ति-सुख-पवित्रता के वायब्रेशन भर जाएंगे जो बच्चों को एकाग्र होने की, पढ़ने की, गुणयुक्त व्यवहार करने की, परस्पर और बड़ों को सम्मान देने की, समय पर कार्य करने की, आज्ञाकारी बनने की, युग की जटिलताओं से सुरक्षित रहने की शक्ति प्रदान करेंगे। जैसे सर्दी आने पर बच्चों की सुरक्षा के लिए उन्हें गर्म कपड़े खरीद कर देते हैं, इसी प्रकार संगदोष, रीस, फैशन, जिद्द, लापवरवाही आदि से सुरक्षा के लिए घर के वातावरण को आध्यात्मिक और नैतिक बनाकर रखें।

कइयों को मन में आता है, ऐसे बच्चे तो संन्यासी जैसे बन जाएंगे, फिर वे विकास की दौड़ में पिछड़ जाएंगे, उनके दोस्त उनका मज़ाक करेंगे, उनमें हीनभावना भी आ सकती है। परन्तु अनुभव कहता है कि घर के ऐसे वातावरण से बच्चे स्थिरचित्त, सकारात्मक, पढ़ाई में एकाग्र, समय का सदुपयोग करने वाले, कर्मठ बन जाएंगे और ऐसे बच्चे कभी पिछड़ नहीं सकते। वे सबके लिए आदर्श बनेंगे, दोस्त मजाक की बजाय उनका अनुसरण करेंगे, उनकी प्रशंसा करेंगे। वे छोटी आयु से ही आत्मविश्वास से भर जाएंगे और बड़े होकर माता-पिता, समाज, देश की सच्ची सेवा कर सकेंगे। ❖

हर समय ईश्वरीय संग का अहसास

अर्चना सक्सैना, बून्दी (राजस्थान)

मुझे ईश्वरीय ज्ञान में आये हुए कुछ समय ही हुआ है लेकिन प्राप्तियाँ असीमित हैं। कभी भी यह अहसास नहीं होता कि मैं अकेली हूँ। हमेशा अपने साथ शक्ति महसूस करती हूँ। एक दिन शिव बाबा ने कहा, जरूरी नहीं कि कड़ी साधना की जाए। योग का मतलब है पिता परमात्मा की याद में रहो, सब कार्य आसान हो जाएंगे। उस दिन से हर कार्य में बाबा को साथ रखती हूँ।

एक दिन मैं बून्दी से कोटा जाने के लिए बस में चढ़ी, बस चल पड़ी, अभी मैं ऊपरी सीढ़ी तक ही पहुँची थी कि ड्राइवर ने एकदम ब्रेक लगा दिया और मैं पलटकर वापस बस के दरवाजे की आखिरी सीढ़ी तक सिर के बल गिर पड़ी। मेरी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। अगले ही पल मुझे अहसास हुआ कि मैं किसी सहारे से टिकी थी लेकिन सहारा तो कुछ था नहीं। सहारा था एक बाबा का साथ जिसने मुझे इतनी ज़ोर से गिरने के बाद भी झूलने का अनुभव कराया। पता नहीं कैसे मैं एकदम खड़ी हो गई और सुन रही थी कि सहयात्रीगण ड्राइवर और कन्डक्टर से लड़ रहे हैं। मैंने उठकर उन लोगों को मना किया, समझाया, तब कहीं जाकर वे शान्त हुए। इतनी उम्र में ज़रा-सा गिरने पर ही लोगों की हालत खराब हो जाती है लेकिन मुझे कहीं एक खरोंच का भी निशान नहीं था। कोटा उतरते समय कन्डक्टर कहने लगा, मैडम, आपकी किस्मत बहुत अच्छी है वरना सोचिए, यदि बस का दरवाज़ा खुला होता तो क्या होता! मैंने मन ही मन सोचा कि यह सब कमाल तो बाबा के साथ का है वरना तो पता नहीं क्या होता? आगे पूरे सफर में मैं बाबा का धन्यवाद करती रही कि बाबा ऐसे ही हर समय मेरी उँगली पकड़े रहना। मुझ जैसा सौभाग्यशाली शायद ही कोई होगा जिसे हर समय परमात्मा के साथ का अहसास होता रहता है। ❖

बीमारी से डरना नहीं

ब्रह्माकुमारी नम्रता मोदी, भरुच

ज्ञान में आये मुझे चार साल हुए हैं। इतने कम समय में मैंने वह पा लिया जो कई सालों में नहीं पाया था। बाबा की बनने के बाद मेरी जीवन शैली ही परिवर्तित हो गई। बाबा ने मुझे हर दुख-दर्द, बीमारी, तकलीफों से मुक्त कराया है। बाबा की जितनी भी महिमा करूँ, कम है। बाबा से मैंने सब संबंध जोड़ लिये हैं। वे कभी सर्जन, कभी सखा, कभी माँ-बाप बनकर हर मुश्किल को आसान कर देते हैं। अब तो बाबा ही मेरा संसार हैं।

मुरली में मिला जवाब

जून, 2012 में एक दुर्घटना में घुटने की चोट का दर्द असहनीय हो गया। फिजीयोथेरापी से फर्क ना पड़ने से डाक्टर ने एम.आर.आई.करने का निश्चय किया जिसमें 50 मिनट बिना पैर हिलाये सोना था। मैं शिवबाबा की याद में स्थिर हो गई और 50 मिनट कब पूरे हो गए पता भी नहीं चला। रिपोर्ट आई, आपरेशन करवाना था। एक दिन बाबा के कमरे में बैठ बाबा से बोली, बाबा, मैं आपकी बच्ची हूँ, आपकी श्रीमत पर पुरा परुषार्थ करती हूँ फिर इतनी तकलीफ क्यों? दूसरे ही दिन बाबा की मुरली में जवाब आया कि अगर चलते-चलते इस पुरानी (शरीर) जुत्ती को तकलीफ होती है, बीमारी आदि है तो इससे डरना नहीं है। और ही ज्यादा खुश होना है। तुम जानते हो यह कर्मभोग है। पुराना हिसाब-किताब चुक्ता हो रहा है। बस मुझे बाबा का जवाब मिल गया। जून 23, 2012 को आपरेशन हुआ लेकिन बाबा ने इतनी शक्ति दी कि मुझे जरा भी दर्द महसूस नहीं हुआ। सब कुछ बाबा को सौंपकर मैं बिलकुल हलकी हो गई। आपरेशन के बाद एक महीना बेड रेस्ट था लेकिन मैं पहले ही दिन से अपने सब काम बिना किसी के सहारे के खुद ही करने लगी।

कठिन परिस्थितियाँ हुई सहज

इस एक महीने में खूब पुरुषार्थ करने का मौका मिला। सेवाकेन्द्र की निमित्त बहनों का खूब सहयोग रहा। अब मैं बिलकुल ठीक हूँ, रोज़ सेवाकेन्द्र जाती हूँ। मुझे खुशी है कि अब मुझमें उन सब शक्तियों का समावेश है जिनके सहारे मैं हर परिस्थिति का सामना हर्ष से करती हूँ। ईश्वरीय ज्ञान में आने के बाद सृष्टि-ड्रामा पर अटूट निश्चय तथा शिव बाबा के साथ और सिर पर उनके हाथ के अनुभव से कठिन से कठिन परिस्थितियाँ भी सहज होती जा रही हैं।

मुझे स्मृति रहती है कि मैं शिव बाबा की हूँ, शिवशक्ति हूँ, इससे शरीर का भान समाप्त हो जाता है। हमेशा अशरीरी होने का पुरुषार्थ कर शिवबाबा की याद में रहें तो हमारी याद बाबा तक अवश्य ही पहुँचती है जिससे बाबा का बल मिलता है और हमें अपने दुख-दर्द का अहसास नहीं होता। हमेशा खुशी का पारा चढ़ा रहता है।❖

कौन क्या कहता है ?

घड़ी : समय मत गंवाओ
समुद्र : विशाल दिल रखो
चींटी : निरन्तर कर्म करते रहो
वृक्ष : परोपकारी बनो
धरती : सहनशील बनो
सूर्य : निरन्तरता बनाये रखो
गुलाब : दुख में भी खुश रहो
दीपक : दूसरों को रोशन करो
कुत्ता : वफादार बनो
कोयल : मीठा बोलो
कौआ : चतुर बनो

संस्कार मिलन की **महारास**

➢ ब्रह्माकुमारी किरण, मुम्बई (बोरिवली)

दुनिया एक मुसाफिर खाना है और हम सभी यात्री हैं। यह बात हम सभी जानते हैं। यात्री आत्मा है और उसकी यात्रा है एक शरीर छोड़ दूसरा लेना, दूसरा छोड़ तीसरा लेना...। यूँ तो हम बस या रेल द्वारा जिस्मानी यात्रा भी करते हैं परन्तु यह यात्रा थोड़े समय की ही होती है। उसमें हमें थोड़ा बहुत समायोजन (Adjustment) करना पड़े तो कर लेते हैं। हम सोचते हैं, यहाँ हमें घर थोड़े ना बनाना है, जो मिला, जैसा मिला, ठीक है, थोड़े समय की ही तो बात है। दुनिया भी एक मुसाफिरखाना है और बहुत जल्दी ही हमें वापस जाना है अपने घर, इसीलिए यहाँ भी थोड़ा-बहुत समायोजन करना पड़े तो कर लेना चाहिए। इसी को हम 'संस्कार मिलन' कहते हैं।

हर परिस्थिति में सामान्य रहने के लिए चाहिए मेहनत

जब हम इस धरती पर आए तब हम 16 कला संपूर्ण थे अर्थात् हमारे संस्कार सम्पूर्ण श्रेष्ठ थे। फिर कलाएँ कम होती गयी और हमारे संस्कार मध्यम से गिरती कला में गए। देखा गया है कि जब कोई परिस्थिति या विघ्न आता है तब हम कुछ बोलते हैं, कुछ कर देते हैं वरना बिना परिस्थिति के तो हम ठीक ही चल रहे होते हैं अर्थात् हमारे वास्तविक संस्कार तो अच्छे ही हैं। अगर परिस्थिति या विघ्न में भी सामान्य रहना चाहते हैं तो थोड़ी मेहनत ज़रूर करनी पड़ेगी। इसी मेहनत को कहा जाता है संस्कार परिवर्तन की तपस्या।

नकारात्मकता को निकालें तो मिलेगा सुख

हम अच्छी आत्मा हैं इसका प्रमाण है कि हमें अच्छे लोग पसंद हैं, अच्छी बातें सुनना पसंद है। किसी और का जीवन अच्छा है तो उसे देखकर अच्छा लगता है। इसीलिए आत्मा को केवल शक्ति नहीं लेकिन 'सकारात्मक शक्ति' कहा जाता है। नकारात्मकता तो बाद में आयी और हम उसके वश होते-होते आज बुरे बन गए हैं। इसी के कारण हम दुखी भी हैं। अगर सुखी बनना है तो इस नकारात्मकता को निकालना पड़ेगा और इसी प्रक्रिया को कहा जाता है संस्कार परिवर्तन।

किसे कहते हैं संस्कार

कर्मों की दोहराई ही संस्कार हैं। जब कोई परिस्थति आती है तो हमारी जो प्रतिक्रिया होती है वो है संस्कार। आत्मा की आदत माना संस्कार। मन उसी आदतवश सोचता है, बुद्धि उसी आदतवश निर्णय लेती है। ये सारे संस्कार हैं। जब मन, वचन, कर्म एक समान हो जाएँ तब कहेंगे 'संस्कार मिलन'। औरों के साथ बाद में, पहले स्वयं के साथ 'संस्कार मिलन'।

कई बार हम केवल बाहरी कर्मों को परिवर्तन कर लेते हैं परन्तु अंदर के भाव और भावनाएँ पुरानी और नकारात्मक ही रहती हैं। जब भाव और भावनाएँ नकारात्मक होंगी तो कर्म भी नकारात्मक हो ही जायेंगे। विचारों को बीज (Seed) कहा गया है। जैसा बीज होगा वैसा पेड़ (कर्म) और उसका फल भी फिर वैसा ही होगा। बीज तो दिखायी नहीं देता केवल पेड़ दिखाई देता है। कर्म दिखाई देते हैं, विचार नहीं। फिर हम

कहते हैं, 'मेरा भाव नहीं था फिर पता नहीं क्यों ऐसे शब्द निकल गए, क्यों ऐसे कर्म हो गए?' उत्तर स्पष्ट है, कर्म हों या शब्द, विचार रूपी बीज के ही फल हैं।

किसे कहते हैं परिवर्तन?

इस स्थिति को परिवर्तन करने के लिए एक ही चीज़ चाहिए और वो है महसूसता की शक्ति। अपने अच्छे, बुरे और व्यर्थ संस्कारों को महसूस करें। इसके बाद चाहिए दृढ़ता का बल। साथ में योगबल और ज्ञानबल भी चाहिए। बल अर्थात् जो बहुत काल से जमा किया गया हो। हमारे कई संस्कार पिछले 63 जन्मों से हैं और कई इस जन्म में भी बने हैं। कई अच्छे भी होंगे तो कई बुरे भी हो सकते हैं। हमें अच्छे संस्कारों की रक्षा करनी है और बुरे संस्कारों को अच्छाई में परिवर्तन करना है।

'मुझे अपने संस्कार परिवर्तन करने ही हैं', इसे कहते हैं दृढ़ता। दृढ़ता को बनाये रखना ही तपस्या कहलाता है। संस्कार परिवर्तन के लिए दृढ़ता और तपस्या दोनों ज़रूरी हैं। जब हम अपने अंदर दृढ़ता बना लेते हैं तब अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सामना करने में दोनों में से एक चीज़ टूटती है या तो दृढ़ता या तो चुनौतियाँ। जो दृढ़ता को नहीं तोड़ता उनके सामने चुनौतियाँ टूट जाती हैं और सफलता मिल जाती है इसे कहेंगे 'संस्कार परिवर्तन की सफलता।'

क्यों करने हैं संस्कार परिवर्तन?

जितना-जितना योगबल जमा होता जाएगा उतना स्पष्ट होता जाएगा कि संस्कार क्यों बदलने हैं और परिवर्तन करने की शक्ति भी आती जाएगी। हमें संस्कार परिवर्तन क्यों करने हैं?

- क्योंकि यह अन्तिम जन्म है।
- क्योंकि इसी एक ही जन्म में कल्प-कल्पांतर की बाजी जीतनी है।
- क्योंकि भगवान कह रहे हैं।
- क्योंकि इसी से सुख और शांति मिलेगी।
- क्योंकि हमें दूसरों को देना है, जब हम सम्पूर्ण बनेंगे तब औरों को दे सकेंगे।

अन्तिम जन्म में भी ब्रह्मा बाबा के राजाई संस्कार

आदिकाल में हमारे संस्कार श्रेष्ठ थे। वहां से सभी को उतरना तो एक जैसा ही है अर्थात् समय अवधि सभी के लिए 5000 वर्ष की ही है परन्तु चढ़ना कितने समय में है और कितना चढ़ना है, यह हमारे अपने ऊपर है। जिनका सतयुग में बहुत ऊँचा पद है उनके अन्तिम जन्म तक भी संस्कार अच्छे होंगे। जैसे 'ब्रह्माबाबा' के संस्कार अन्तिम जन्म में भी किसी राजा से कम नहीं थे। जिनका पहले जन्म में ही कम पद होगा या पहला जन्म ही सतयुग के 8वें जन्म के समय होगा तो 5000 वर्ष उतरकर कितने नीचे आ जाएँगे, हम समझ सकते हैं। वर्तमान के संस्कारों को देखें, हमें पता चल जाएगा कि पहले मेरा पद क्या था, या तो भविष्य में क्या होगा? तो चलिए इस जन्म को आखिरी बाज़ी समझकर हम अपनी सारी शक्तियाँ, सारे खज़ाने लगा दें जिससे हमारे संस्कार ऊँचे, श्रेष्ठ और दैवी बन जाएँ। फिर पूरे 5000 वर्ष हमें अपने सिर पर हाथ नहीं रखना पड़ेगा कि 'हाय मेरा भाग्य'। हमें जो शक्तियाँ लगानी हैं वो भी तो हमें शिवबाबा से ही मिल रही हैं इसलिए कुछ मुश्किल या भारी काम नहीं है।

ऊंचे संस्कार माना जिनमें गंभीरता हो, समझ हो, ऊँची भावनाएँ हों। श्रेष्ठ संस्कार माना सभी को मदद करना, सम्मान देना, सभी को अपना समझना। दैवी संस्कार माना जिनमें पवित्रता हो, नम्रता, धैर्य और शालीनता (Royality) हो। ❖

ज़िन्दगी

➢ ब्रह्माकुमारी एंजिल, हाथरस

इस एक शब्द (ज़िन्दगी) पर लोग अटक जाते हैं कि यह है क्या? कुछ लोगों के लिये बहुत खूबसूरत है और कुछ के लिये एक अभिशाप। मैंने इसे बहुत ही करीब से जाना है। क्या आप इसके बारे में मेरी सोच जानना चाहते हैं?

मैंने पाया प्यारा और न्यारा साथी

ज़िन्दगी बहुत खूबसूरत है, इसे जिओ। जीने का मज़ा तब आता है जब हमारे पास एक ऐसा साथी हो जिसके साथ ज़िन्दगी खूबसूरत लगे, जो हर पल हमारा साथ दे। हमारी हर बात में मदद करे, हमें कभी अकेला छोड़कर न जाये। हम जब चाहें, जहाँ चाहें ,जैसी चाहें उससे बातें करें। ऐसा साथी तो आपने सिर्फ सपनों में ही देखा होगा। लेकिन मेरा अनुभव है कि ऐसा साथी मिल सकता है क्योंकि मैंने उन्हें पा लिया है। आप भी उन्हें पा सकते हैं। ज्यादा देर मत करना वरना बहुत पछताएँगे। क्या आप जानना चाहते हैं कि वो कौन हैं, वो हैं भगवान। सबसे प्यारे और सबसे न्यारे।

भगवान से अच्छा साथी कोई नहीं

मैंने अपनी ज़िन्दगी उनके साथ जोड़ दी है। अब वो हर बात में मेरा ख्याल रखते हैं। हर पल मेरे साथ रहते हैं। मैं जब चाहूँ तब उनसे अपनी बातें कर सकती हूँ। वो हमेशा मेरी हर बात में मदद करते हैं क्योंकि वो मेरे सच्चे साथी हैं। भगवान से अच्छा साथ हमारा कोई भी नहीं दे सकता। वो हर बुरी बात से, हर बुरे इन्सान से बचाते हैं। बीमारी को एक पल में दूर कर देते हैं। मैं उन्हें बाबा कहती हूँ। मैं उनके बिना एक पल भी नहीं रह सकती। बाबा ने मेरा हाथ पकड़ लिया है और वो मेरा हाथ कभी नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने मुझसे वायदा किया है कि वो मुझसे दूर कभी नहीं जायेंगे और मैंने भी बाबा से वायदा किया है कि मैं भी उनसे कभी दूर नहीं जाऊँगी। मेरे बाबा जब से मेरी ज़िन्दगी में आये हैं तब से सब कुछ बदल गया है। पहले ज़िन्दगी बहुत बुरी लगती थी क्योंकि कोई सच्चा साथी ही नहीं मिला। न कभी माँ-बाप का प्यार मिला और न ही दोस्तों का। मेरे पास सब कुछ है, दोस्त भी, माँ-बाप भी, काफी बड़ा परिवार भी है लेकिन प्यार से अपना कहने वाला कोई भी नहीं। मैंने कभी किसी से अपना दु:ख नहीं बाँटना चाहा सिर्फ अपनी खुशी सबसे बाँटना चाहती थी लेकिन किसी ने मेरी खुशी भी अपने साथ नहीं बाँटी। फिर एक दिन स्वयं भगवान ने अपना लिया तब मुझे महसूस हुआ कि वास्तव में भगवान से अच्छा साथी कोई नहीं है।

बाबा मुझे पढ़ाई कराते हैं

अगर कोई लड़का-लड़की आपस में बहुत प्यार करते हैं तो भी वे एक-दूसरे के साथ ज़िन्दगी भर नहीं रह सकते। कोई न कोई काम, कोई न कोई बन्धन ऐसा होता है जिसकी वजह से उन्हें भले एक पल के लिए ही सही पर दूर होना पड़ता है और फिर मरने के बाद तो सबको अलग होना ही है लेकिन भगवान तो अमर हैं। वो कभी हमसे एक पल के लिये भी दूर नहीं जाते और न ही कभी हमें अकेला छोड़ कर जायेंगे। आज बाबा ने मुझे इतना ऊँचा बना दिया है कि सब मुझसे बहुत प्यार से बातें करते हैं, मेरी तारीफ करते हैं, सबको मेरा साथ अच्छा लगता है। बाबा मुझे पढ़ाई कराते हैं। यू.पी. बोर्ड की 12वीं की परीक्षा में मेरे 81% मार्क्स आये थे। परीक्षा के समय पर हमारे घर में बहुत लड़ाई चल रही थी। बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि मैं पास हो पाऊँगी लेकिन बाबा ने मेरे सारे पेपर कर दिये और मुझे इतने अच्छे मार्क्स दिला दिये। बहुत-बहुत शुक्रिया मेरे बाबा और मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ। ❖

कर्मभोग के समय
बाबा की मदद

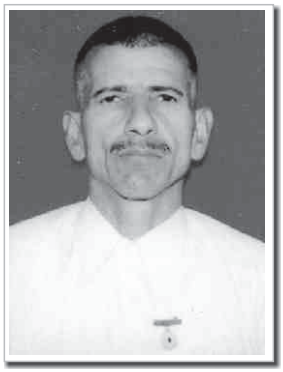

➢ ब्रह्माकुमार सुरजन सिंह, बस्सी (राजस्थान)

शिव भगवानुवाच, ' जो बच्चे बाप के पूरे-पूरे मददगार हैं उनकी अन्त में स्वयं बाप संभाल करते हैं, ऐसे बच्चों को वन्डरफुल सीन-सीनरियां दिखाकर खूब बहलायेंगे, वे अन्त में सुख देखेंगे, साक्षात्कार करते रहेंगे।' भगवान के इस वरदान को अलौकिक जीवन में अनेक बार शारीरिक कर्मभोग के दौरान अनुभव किया है। एक घटना इस प्रकार है –

दो वर्ष पहले नवरात्रों में लालसोट कस्बे में, काली मां के मंदिर के पास मैदान में पहाड़ बनाकर उस पर चैतन्य देवियों की झांकी सजानी थी। उसके लिए बांस-बल्लियों आदि से पहाड़ का ढांचा बनाया जा रहा था। इस सेवा के दौरान मेरे पाँव में फ्रैक्चर हो गया। डॉक्टर ने तुरन्त प्लास्टर करके आराम करने की सलाह दी।

उसी दिन शाम को ही झांकी का उद्घाटन होना था जबकि पहाड़ बनने का काफी कार्य अभी बाकी था। वहां कुछ सेवाधारी व मज़दूर थे परन्तु मेरे अलावा इस कार्य का उनमें से कोई अनुभवी नहीं था। थोड़ी देर में हमारी निमित्त बहन भी वहां पहुँच गयी, उन्होंने सबका उमंग-उत्साह बढ़ाया व दृढ़ता से कहा कि झांकी का निश्चित समय पर उद्घाटन होना ही है। मैं पैर की चोट व प्लास्टर की परवाह किये बिना पहाड़ तैयार करने में जुट गया और समय पर पहाड़ तैयार हो गया। रात्रि 8 बजे से 11 बजे तक पहाड़ पर चैतन्य देवियों की झांकी सजायी गयी जिसको जनता से बहुत पसन्द किया व दूसरे दिन भी यही झांकी पुन: लगाने की मांग की।

झांकी समापन के बाद रात्रि को खाना खाकर मैं सोया मगर पैर में भारी दर्द होने से नींद नहीं आयी लेकिन सेवा की सफलता की खुशी बनी रही। अमृतवेले तीन बजे के बाद थोड़ी देर के लिए आंख लगी जिस दौरान बाबा ने बहुत सुन्दर दृश्य दिखाया – सामने एक ऊँचे आसन पर साकार बाबा (ब्रह्मा बाबा) बैठे हैं जिनके सामने लोगों की बहुत ही लम्बी लाइन लगी है। वे एक-एक कर बाबा के सामने आ रहे हैं जिन्हें बाबा दृष्टि व वरदान दे रहे हैं। मैं इस लाइन में काफी पीछे खड़ा था। अचानक बाबा ने अंगुली से इशारा कर मुझे आगे बुलाया। मैं बाबा के सामने पहुँचा तो बाबा ने मुसकान व स्नेह भरी दृष्टि मुझे दी और सेवा की सफलता की मुबारक दी। जैसे ही मैं बाबा के सामने से आगे बढ़ने लगा, बाबा अदृश्य हो गये और मेरी आंखें खुल गयी। मैंने अपने को एकदम हलका व खुशी से भरपूर महसूस किया। पैर में बिल्कुल भी दर्द नहीं था। ना ही नींद की कमी की कोई थकावट महसूस हो रही थी। उठकर समय देखा तो 4 बज रहे थे। अमृतवेले का योग बहुत अच्छा किया तथा तैयार होकर मुरली क्लास में पहुँच गया। फिर स्वयं ही मोटर साइकिल चलाकर लालसोट से 80 किलोमीटर दूर जयपुर अपनी लौकिक ड्यूटी पर भी उपस्थित हो गया।

कार्यालय की ड्यूटी पूरी कर शाम को पुन: मोटर साइकिल से वापिस आया व रात्रि को झांकी के दौरान सेवा की। उस रात को भी बारह बजे के लभगभ सोया तो पुन: पैर में भारी दर्द होने लगा व नींद नहीं आई। पर तीन बजे के बाद थोड़ी देर आंख लगी जिसके दौरान बाबा ने पुन:

दूसरा दृश्य दिखाया – मेरा प्रकाश का शरीर एकदम हलका है, हाथों को थोड़ा-सा हिलाते ही मैं एकदम उड़ने लगा, बड़े-बड़े पेड़ों व टहनियों में से गुज़रते हुए आसमान में पहुँच गया, टहनियों ने मुझे स्पर्श तक नहीं किया। आसमान में पहुँचकर ऊपर से पूरे शहर को देख रहा हूँ व बहुत खुशी का अनुभव कर रहा हूँ। थोड़ी देर बाद मेरी आंखें खुलीं तो अपने आपको एकदम हलका पाया व पैर में कोई दर्द महसूस नहीं हो रहा था। वही चार बजे का समय था। उठकर अमृतवेले का योग करके, तैयार होकर सब के साथ मुरली क्लास की व उसके बाद 50 किलोमीटर मोटर साइकिल चलाकर लालसोट से बस्सी आ गया। इस प्रकार प्यारे शिव बाबा अपने मददगार बच्चों की हर परिस्थिति में संभाल करते हैं और अन्त में भी पलकों पर बिठाकर घर ले जायेंगे, इस निश्चय के बल से हम सदा निश्चिन्त हैं। ❖

दर्द में भी दुख नहीं

➢ **ब्रह्माकुमारी चंद्रिका,**
दहानूकरवाडी,
कान्दीवली पश्चिम, मुम्बई

मुझे पिछले 15 सालों से पेटदर्द की तकलीफ है। अनेक तरह के इलाज भी करवाये पर यह कर्मभोग बरकरार है। चौबीस घन्टे में किसी भी समय दर्द शुरू होता है और 15-20 मिनट तक रहता है। परन्तु जितनी तीव्रता दर्द की होती है उतनी ही स्वउन्नति के लिए पुरुषार्थ की तीव्रता बढ़ती है। यह दर्द बाबा से बुद्धियोग जोड़ने में बहुत मदद करता है। मैं हर मास (मास में एक बार) 8 घण्टा (सवेरे 4.00 से 12.00 बजे तक) योग भट्ठी करती हूँ। बहुत अच्छी अलौकिक अनुभूतियाँ होती हैं।

मुझे प्यारे ब्रह्मा बाबा का मिसाल याद रहता है। बाबा को जब खांसी आती थी तब बाबा हंसी में कहते थे, 'यह खांसी तो मेरी मासी है जो साथ चलेगी।' बाबा ने शारीरिक कर्मभोग को खुशी-खुशी स्वीकार किया।

बलिहारी इस पेटदर्द की जो रात को डेढ़-दो (1.30-2.00) बजे उठाकर योग में बिठाता है। बाबा की यह याद ऐसी सुखदाई होती है जो अति दर्द में भी दुख अंशमात्र अनुभव नहीं होता। एक दिन मैं संदली पर योग कराने बैठी थी। मुझे उस समय ऐसा अनुभव हुआ कि मैं बापदादा के सम्मुख बैठी हूँ और मुझे बाबा ने अपने पास बुलाया, मेरे सिर पर हाथ घुमाया और ऐसा लगा कि दुख-दर्द बाबा ने हर लिए। तब से लेकर मुझे बहुत दर्द होते भी कभी दुख महसूस नहीं होता।

तन के हिसाब-किताब को चुक्ता करते मुझे विशेष तीन फायदे हुए हैं, 1.देह से न्यारा होने का अभ्यास बढ़ गया; 2.योग की लगन सदा बनी रहती है; 3.अन्तिम समय तन की ओर से कैसा भी पेपर आयेगा, मैं अवश्य सेकन्ड में पास कर लूंगी, यह विश्वास बढ़ गया है। आज तक कभी भी बाबा की बेहद सेवा में इस भोगना के कारण रुकावट नहीं आयी है और मुझे विश्वास है कि आगे भी कभी नहीं आयेगी।

बाबा को मैं यही कहती,
प्यारे बाबा,
यादों के आँचल में
सदा बसाकर रखना,
किरणों की बाहों में
सदा समाकर रखना,
तुमसे तनिक दूर जाऊँ न मैं,
भूले से भी भूल पाऊँ न मैं।
❖

स्वर्णिम गौरव

➤ ब्रह्माकुमार नारायण, फैज़ाबाद

लेखक एक स्वर्णिम गौरव का गान करना चाहता है, जो पारसमणि समान है। वर्षों से कच्चे लोहे को कंचन बनाने का काम करता चला जा रहा है। शिव की अनन्य भक्त माँ अहिल्या के तेजोतप की पावन माटी मालवा की गोद में बसे शहर इन्दौर (मध्य प्रदेश) में ''शक्ति निकेतन'' आलोकित है। यह अनोखा छात्रावास अखिल विश्व की कुमारियों का आह्वान कर रहा है, उनके जीवन को हीरे समान तराशने के लिए।

मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ क्योंकि मेरी तीन पुत्रियाँ इस शक्ति निकेतन में रहकर अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करने में समर्थ हुई हैं। मैं गत 14 वर्षों से इसके परिसर में आता रहा हूँ, जहाँ मुझे अनूठे अनुभव होते रहे हैं। इससे प्राप्त अब तक के आनन्द को कुछ पंक्तियों में प्रस्तुत कर रहा हूँ –

प्यारे शक्ति निकेतन तुम तो दुनिया के सिरताज हो।
न्यारे साज़ हो, आवाज़ हो प्रभु की और भारत की लाज हो।।
सौंपी मैंने पुत्रियाँ कुमारी, गई तेरे दर पर शृंगारी।
हीरे जैसी उनकी आभा, देख चकित हुई दुनिया सारी।।

मैं उत्तर प्रदेश निवासी हूँ। मैंने कई छात्रावास देखे परन्तु चहुँमुखी दृष्टि से प्रदत्त सुविधाओं वाला शक्ति निकेतन समूचे विश्व में इकलौता है, बेजोड़ है, न्यारा है, प्यारा है। यहाँ भारत के हर प्रान्त से आकर कन्यायें दाखिला लेती हैं। इसके अतिरिक्त नेपाल सहित अन्य देशों से भी कन्यायें आती हैं। भिन्न-भिन्न स्थान निवासी एवं अनेक भाषा भाषी होते हुए भी इन कन्याओं में आपसी प्यार, समरसता और समन्वय देखते बनता है।

मैं जब-जब भी अन्य अभिभावकों से मिलता हूँ तो उन्हें शक्ति निकेतन के विषय में दो शब्द अवश्य कहता हूँ कि पूछो अपनी लाडली से, वह विश्वसुंदरी बनना चाहती है या फूलों के गलीचे पर चहलकदमी करती हुई विश्व वंदनीय देवी? मैं तहेदिल से उन माता-पिता को कहना चाहता हूँ कि अगर वे अपनी पुत्रियों के लिए कोई उत्कृष्ट ठिकाना चाहते हैं तो वह है, यथा नाम तथा गुण ''शक्ति निकेतन।'' मैं दृढ़तापूर्वक निश्चय से कह सकता हूँ कि दुनिया का हर पिता अपनी प्यारी पुत्री को शक्ति निकेतन के हवाले कर चैन की नींद सो सकता है।

पालकों से मेरा विनम्र अनुरोध

कन्याधन अनमोल अमानत, इसको अब तुम पहचानो।
जन्म-जन्म का भाग्य बना लो, भगवानुवाच है यह सच मानो।।
युग परिवर्तन की वेला है, प्रभु अब गुप्त पधारे हैं।
बिन कन्या के कार्य न होगा, प्रभु ये वचन उच्चारे हैं।।
अज्ञान निशा-निद्रा अब त्यागो, नहीं समय है सोने का।
पाओगे तुम स्वर्णिम फसलें, अब यही समय है बोने का।।

शक्ति निकेतन के अपने अनुभवों को आपके साथ बाँट रहा हूँ, जो मात्र प्रशंसा नहीं अपितु सत्यता है। यहाँ की कुछ विशेषताएँ अग्रलिखित हैं –

स्वावलंबन

शक्ति निकेतन की समस्त व्यवस्थायें केवल कुमारियाँ ही सम्भालती हैं। घरेलू चक्की से गेहूँ पीसा जाता है। केन्द्र की बेकरी से ही ब्रैड, बिस्किट, केक आदि बनाये जाते हैं। साफ-सफाई करना, मंडी से साग-सब्जियाँ, फल, अनाज आदि क्रय करना – ये तमाम गतिविधियाँ वरिष्ठ बहनों के मार्गदर्शन में कन्याओं के द्वारा सम्पन्न होती हैं। यही आदर्श प्रबन्धन है।

चहुँमुखी विकास प्रशिक्षण

ऐसे तो अनेक प्रकार के प्रशिक्षण कला-कृतियों के सामान्यतया चलते ही रहते हैं किन्तु ग्रीष्म अवकाश में विशेष प्रशिक्षण दिये जाते हैं। मुख्य प्रशिक्षण – बुनाई, सिलाई, कढ़ाई, खिलौने बनाना, पाक-कला, भाषण करने की कला, नृत्य, संगीत, लेखन, कम्प्यूटर आदि हैं।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

यहाँ सम्पन्न होने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में व्याख्या करने की आवश्यकता ही नहीं है। इस छात्रावास की कन्याओं द्वारा माउण्ट आबू में प्रदर्शित होने वाले कार्यक्रम विश्व प्रसिद्ध हैं। उच्च कोटि की नाट्य कलायें प्रदर्शित की जाती हैं, जिन्हें देखकर व्यवसायिक कलाकार भी दाँतों तले उंगली दबाये बिना नहीं रह पाते। संक्षेप में यही कह सकते हैं कि हर क्षेत्र में इन कुमारियों ने अपनी कुशलता का लोहा मनवाया है।

आदर्श आतिथ्य

''अतिथि देवो भव'' की गरिमा को बनाये रखने में ये कुमारियाँ सफल हैं क्योंकि इनके रोम-रोम में ये भाव कूट-कूट कर भरा होता है।

अनोखा उड़न खटोला

सभी कुमारियाँ सामूहिक रूप से जिस कक्ष में योग (मेडिटेशन) करती हैं, उसे मैंने उड़न खटोला नाम दिया है। यहाँ बुद्धि रूपी विमान में बैठकर पूरे सृष्टि का चक्र लगाती हैं ये कुमारियाँ। अमृतवेले सुबह 4 बजे एवं शाम को 6:30 बजे योग होता है। अमृतवेले (ब्रह्ममुहूर्त) का महत्व क्या होता है, कोई इनसे आकर सीखे। जब ये अमृतवेले योग-कक्ष में बिना आवाज़, दबे पांव आती हैं तो ऐसा ही प्रतीत होता है कि आसमान से परियाँ ज़मीं पर आयी हैं एक अद्भुत आनन्द का वायुमण्डल निर्मित करने। इन्हें देखकर यही भाव जगता है -

हमने देखा तुम भी देखो, धरती के चैतन्य सितारे,
चेतन हैं पर रहते न्यारे, ये हैं सारे जग के प्यारे।
जड़ तारे तो गगन बीच हैं, चेतन का है वास यहाँ,
चेतन जग-देदीप्यमान है, शक्ति निकेतन है स्वर्ग जहाँ।।

ये सौभाग्यशाली कुमारियाँ वही हैं जिन्होंने परमात्मा को जाना है, पहचाना है एवं परमात्मा के दिशा-निर्देश पर जीवन जीने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। अद्भुत है शक्ति निकेतन और अद्भुत हैं ईश्वरीय पालना लेने वाली यहाँ की कुमारियाँ किन्तु इन सबसे अद्भुत हैं यहाँ की संचालक दीदी एवं सहयोगी बहनें, जो एक सुन्दर विश्व रचने में परमात्मा की सहयोगी बनी हैं। वंदन है, नमन है कोटि-कोटि उनको।

छात्रावास में नई कन्याओं के प्रवेश हेतु जनवरी माह से अप्रैल माह तक सम्पर्क कर सकते हैं। प्रवेश प्रकिया मई-जून माह से प्रारम्भ हो जाती है। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

''शक्ति निकेतन'', ओम् शान्ति भवन,
न्यू पलासिया, इन्दौर (म.प्र.),
फोन नं. - 0731-2531631
मोबाइल नं. - 09425316843, 09425903328

भाग्यशाली वे नहीं होते जिन्हें सब कुछ अच्छा मिलता है बल्कि वे होते हैं जिन्हें जो मिलता है, उसे वे अच्छा बना लेते हैं

वैलेन्टाइन डे पर विशेष...

प्यार : एक अनुभव

➢ ब्रह्माकुमार उमेश, कोटद्वार (गढ़वाल), उत्तराखंड

प्यार शब्द से सभी परिचित हैं, उसकी मधुर गूँज हर किसी को आकर्षित करती है लेकिन यह क्या होता है, क्या कोई इसे देख सकता है? विज्ञान के पास पैमाना न होने के कारण वह असहाय है। प्यार पुरुषार्थ आधारित है या भाग्य आधारित है? आइये, अनुभव से इसे देखने का प्रयत्न करते हैं।

जीवन की उलझनों में झुँझलाता हुआ मैं अपनी ज़िंदगी आगे बढ़ा रहा था। बाबा से प्रश्न पूछता था, मुझे प्यार करते हो ना? तुम हो तो उलझनें क्यों? मुझे भी प्यार करना सीखना है ताकि सारी उलझनें खो जाएँ। मीरा-सी व्याकुलता मुझमें नहीं आ पा रही है, सूरदास की आँखों के उस रमणीक दृश्य का दर्शन मुझे भी करना है। वो तो भक्त थे, उनमें इतनी लगन थी तो मेरा प्यार तो ऐसा होना चाहिए कि दुनिया भूल जाए।

प्यार पर विचार करें तो इसके होने पर कुछ मिलता है और कुछ छूटता है, आकर्षण के द्वारा नज़दीक आने पर प्यार की शुरूआत आशिक सम्मान से और माशूक देखभाल से करता है। प्यार को विश्वास, समर्पण, त्याग, खुशी और जीवन परिवर्तन के आधार से ही देखा जा सकता है। मन में सम्मान माशूक की बातों का, अनुशासन और मर्यादाओं का हो तो यही सम्मान, प्यार के शिखर पर पहुँच जाता है। धीरे-धीरे विश्वास पैदा होता है, फिर निश्चय, निश्चय से समर्पण और यही समर्पण त्याग करने में सक्षम और साहसी बना देता है। दुनिया इसे प्यार कह देती है। अपनी नज़रों को भूल आशिक अब माशूक की नज़र से दुनिया को देखना शुरू कर देता है। अपने अंदाज में कहूँ तो

लो बदल दी मैंने अपनी आँखें,
तेरी नज़रों से अब दुनिया देखता हूँ।

एक बार त्याग देखने या महसूस करने के बाद आत्मा उत्साह में आने लगती है। मन के गीतों पर बुद्धि नृत्य करती है और देह का रोम-रोम थिरकने को तैयार रहता है। मैं तो भाग्यशाली हूँ कि मेरे चारों तरफ त्याग ही त्याग फैला है। बाबा का हर बच्चा त्याग से ही तो खिला और महका है। नज़रें जिस पर टिका दूँ वो बाबा से जोड़, उसकी प्रेम-धुन में मुझे रमा जाता है। उसे याद करने के लिए मुझे कुछ पंक्तियाँ रटनी और उच्चारित नहीं करनी पड़ती। याद सरल हो, सुख और खुशी की अनगिनत लहरें छोड़ जाती है। वो सजाता है और मैं इठलाता हूँ। बिन आँखों की मदद के उसके परम सुन्दर रूप का दर्शन, वाह मेरी तकदीर, वाह उसकी कमाल!

प्यार हमेशा दोनों को एक सम्बन्ध के आधार से जोड़ता है। जहाँ दोनों ही एक-दूसरे को देने को तैयार रहते हैं और हर देने पर सम्बन्ध अटूट होता चला जाता है। दुनिया में भी एक जन्म नहीं, जन्मों-जन्मों तक समर्पण की कसमें ले ली जाती हैं। यदि प्यार इच्छाओं, कामनाओं या शर्तों के आधार से है तो हमेशा दूरी बनी रहती है और इच्छा पूर्ण न होने पर यही दूरी दरार में बदल जाती है। प्रेम करने वाले भिक्षुक नहीं, दाता होते हैं। वो प्राप्ति को ज्यादा महत्व नहीं देते, प्रेमी की याद की पीड़ा दुख नहीं लगती, एक साहित्यकार की पंक्तियाँ इस पीड़ा को यूँ माँगती हैं –

पराया देश हो, याद तेरी मेरे साथ हो,
पीड़ा हो वो जो आज तक सहन न की हो।

आशिक धीरे-धीरे माशूक के समान बन जाता है। अपना सब कुछ भूलने लगता है जिसे बाबा जीते जी मरना कहते हैं और दुनिया 'लीन हो गया' कह देती है। आशिक कभी माशूक का स्थान लेने की नहीं सोचता बल्कि उसकी शक्ति और कार्यों में सहायक बन जाता है। वह कभी

(शेष...पृष्ठ 32 पर)

ईमानदारी ने कराया गुणगान

➢ ब्रह्माकुमार लक्ष्मण ए.नरूला, मुंबई (गोरेगांव)

मैं पिछले ढाई वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान का नियमित विद्यार्थी हूँ। बाबा का ज्ञान मिलने से अच्छे-बुरे कर्मों की पहचान मिली है। आत्मा के ज्ञान से खास यह बात समझ में आई है कि आत्मा अविनाशी है और वह जो भी अच्छा या बुरा कर्म करती है, उसके साथ ही जाता है। अच्छा कर्म करने से आत्मा को सुख मिलता है तथा बुरा कर्म करने से दुख मिलता है।

मैं टैक्सी चलाता हूँ। एक दिन मैंने मुंबई के एक ग्राहक को अपनी टैक्सी में बिठाया और उसे उसके गन्तव्य स्थान पर छोड़ दिया। जब दूसरा ग्राहक बैठा तब मुझे पता चला कि पहला ग्राहक रुपयों का बैग टैक्सी में भूल गया है। बैग में 80,000 रुपये देख मैंने तुरन्त निर्णय कर लिया कि कुछ भी हो, उसे ढूंढ़कर बैग लौटाना ही है।

मैंने दूसरे ग्राहक को, दूसरी टैक्सी पकड़ने को कहा और मैं उसी इमारत के नीचे खड़ा हो गया जहाँ मैंने पहले ग्राहक को छोड़ा था। कुछ देर के पश्चात् वह भाई इमारत से नीचे आया, मुझे देखा तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैंने उसका रुपयों से भरा बैग जब वापस किया तो उसने कहा, मैंने तो समझा था कि ये रुपये अब गए लेकिन शायद आप जैसे लोगों के कारण ही धरती थमी हुई है। मैंने उससे कहा कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से प्राप्त ज्ञान ने मेरे में ये गुण भरे हैं। फिर मेरे दिल से निकला, शुक्रिया बाबा जो इतना ऊँचा ज्ञान दिया। उन्हें भी सेवाकेन्द्र पर जाने की सलाह दी। उन्होंने कहा, यह घटना अवश्य ही अखबार में प्रकाशित होनी चाहिए। उन्होंने टैक्सी स्टैण्ड पर ही फोटोग्राफर द्वारा मेरा फोटो खिंचवाया और खबर प्रकाशित करवा दी।

मैंने विचार किया कि एक ही अच्छी बात हमारा कितना गुणगान करा देती है। बाबा की श्रीमत अनुसार यदि हम सभी गुणों को जीवन में अपनायेंगे तो प्यारे बापदादा की आशाओं को पूर्ण कर सकेंगे तथा दुनिया को

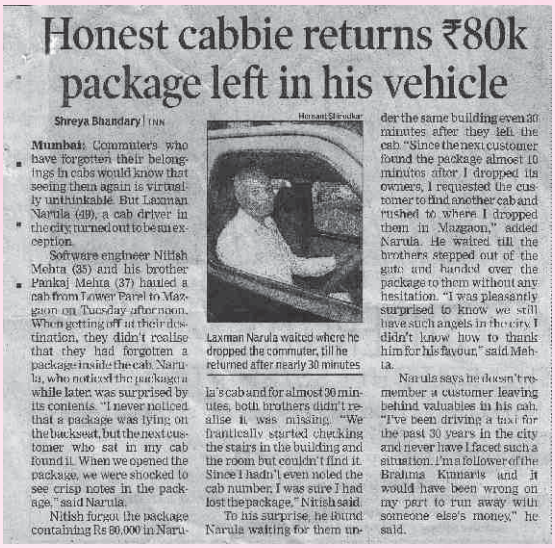

Honest cabbie returns ₹80k package left in his vehicle

Shreya Bhandary | TNN

Mumbai: Commuters who have forgotten their belongings in cabs would know that seeing them again is virtually unthinkable. But Laxman Narula (49), a cab driver in the city, turned out to be an exception.

Software engineer Nitish Mehta (35) and his brother Pankaj Mehta (37) hailed a cab from Tower Parel to Mazgaon on Tuesday afternoon. When getting off at their destination, they didn't realise that they had forgotten a package inside the cab. Narula, who noticed the package a while later, was surprised by its contents. "I never noticed that a package was lying on the backseat, but the next customer who sat in my cab found it. When we opened the package, we were shocked to see crisp notes in the package," said Narula.

Nitish forgot the package containing Rs 80,000 in Narula's cab and for almost 30 minutes, both brothers didn't realise it was missing. "We frantically started checking the stairs in the building and the room but couldn't find it. Since I hadn't even noted the cab number, I was sure I had lost the package," Nitish said.

To his surprise, he found Narula waiting for them under the same building even 30 minutes after they left the cab. "Since the next customer found the package almost 10 minutes after I dropped its owners, I requested the customer to find another cab and rushed to where I dropped them in Mazgaon," added Narula. He waited till the brothers stepped out of the gate and handed over the package to them without any hesitation. "I was pleasantly surprised to know we still have such angels in the city. I didn't know how to thank him for his favour," said Mehta.

Narula says he doesn't remember a customer leaving behind valuables in his cab. "I've been driving a taxi for the past 30 years in the city and never have I faced such a situation. I'm a follower of the Brahma Kumaris and it would have been wrong on my part to run away with someone else's money," he said.

Laxman Narula waited where he dropped the commuter, till he returned after nearly 30 minutes

परिवर्तन कर सकेंगे। सत्यता, पवित्रता, ईमानदारी जैसे गुण ही जीवन को सुखमय व शांत बना सकते हैं। ❖

प्यार: एक अनुभव..पृष्ठ 29 का शेष

उससे बड़ा नहीं होता, दोनों की दिशा निश्चित होती है, दिशा का परिवर्तन भटकाव ला देता है। द्वापरयुग से भटकाव की यही वजह है। अभी स्वयं परमात्मा पिता सर्वोच्च शिक्षक बन इस दिशा का ज्ञान करवाते हैं। वो हमेशा माशूक हैं और मैं सदा आशिक। तभी यह प्यारा सम्बन्ध बनता है, नहीं तो बन्धन का रूप ले लेता है।

वो मेरी क्षमताओं को और मैं उनकी शक्तियों को, कार्यों को जानता हूँ। जब-जब मैं झुकता हूँ अर्थात् अपनी भावनाओं के पुष्प समर्पित करता हूँ, वो मुझे अपनी पलकों में उठा देवों से भी बढ़कर देखभाल करते हैं। मेरे इसी रूप को दुनिया इष्ट देव का मान देने के लिए तैयार खड़ी है। मुझे उनके ज्ञान का, प्रेरणाओं का और अनुशासन का सम्मान करना है, इस भाव से कि वो मेरे लिए ही तो हैं। वो मुझे श्रेष्ठ बनाने आये हैं। उनके प्रति यही सम्मान, आज की खुशी और भविष्य का राजतख्त बन जाता है। ❖

इच्छा मात्रम् अविद्या

➢ ब्रह्माकुमारी सुशीला, ढोणे (आन्ध्रप्रदेश)

''इच्छा मात्रम् अविद्या'' स्थिति में बड़ी शक्ति है। इसका अर्थ है इच्छा की अविद्या हो जाना। इस स्थिति में स्थित होकर ही हम भक्तों की सब मनोकामनायें पूर्ण कर सकते हैं। मान लीजिए, हमारे पास कोई अमूल्य सुन्दर चीज़ है, उससे हमें बहुत प्यार है। उसे कोई अन्य भी पाना चाहता है। उसने हमसे उस चीज़ को माँगा पर हम दे नहीं पाते क्योंकि हमारा उसमें ममत्व है इसलिए दूसरे को सन्तुष्ट नहीं कर सकते। जब अपनी इच्छायें हों तो हम दूसरों की इच्छायें पूरी नहीं कर सकते।

सही इच्छा का मापदण्ड

इच्छायें दो प्रकार की होती हैं, उन्नति की ओर ले जाने वाली और पतन की ओर धकेलने वाली। उनमें से कौन-सी इच्छायें हमें पूरी करनी हैं, यह चुनाव करने वाले हम हैं। उत्पन्न होने वाली इच्छा के साथ उसे प्रैक्टिकल में लाने की इच्छा शक्ति भी हमारे अन्दर होती है। इस इच्छा शक्ति को सही तरीके से काम में लगाने का हमारा लक्ष्य होना चाहिए। हर व्यक्ति यही समझता है कि उसकी इच्छायें सही हैं, वह सही रास्ते पर चल रहा है। लेकिन सही का मतलब यह नहीं कि जो चाहें सो करें। सही का मापदण्ड यह है कि उससे आत्मा की उन्नति हो, उसमें विश्व कल्याण समाया हुआ हो, स्वार्थ भाव का मिश्रण न हो, वह भगवान को अर्पित करने जैसी हो, भगवान भी हमारी उस इच्छा से खुश हो जायें।

विचारों को चेक करके कर्म में लाएं

आजकल की दुनिया में मनुष्य अपने-अपने अनुभवों के आधार पर भिन्न-भिन्न तरीके और रास्ते भगवान से मिलने के बारे में, योग साधना के बारे में बताते रहते हैं लेकिन सत्य रास्ता तो एक ही होता है जो सत्यम् शिवम् सुंदरम् परमात्मा शिव स्वयं सृष्टि पर अवतरित होकर बताते हैं। मानव कर्मों से गिरे हैं तो कर्मों से ही चढ़ सकते हैं। अच्छे कर्मों का फल सुख-शान्ति है तो बुरे कर्मों का फल दुख-अशान्ति। विचार बीज है, कर्म उस बीज का वृक्ष है। इसलिए पहले अपने विचारों को चेक करना है कि ये अच्छे हैं या बुरे हैं, कल्याणकारी हैं या अकल्याणकारी हैं, स्वार्थ के लिये हैं या सब की भलाई के लिये हैं, इनसे मेरी उन्नति होती है या पतन होता है। ये सब चेक करने के बाद ही उन विचारों को कर्म में लाना होता है।

इच्छा हो दूसरों की भलाई करने की

''इच्छा मात्रम् अविद्या हो जाओ'' बाबा के इस महावाक्य का मतलब यह नहीं है कि सब इच्छायें छोड़कर एक जगह बाबा की याद में चुपचाप बैठ जाओ। इच्छायें उत्पन्न होती रहती हैं और होंगी भी ज़रूर। मैं इच्छा रहित हो जाऊँ, ऐसा सोचना भी एक इच्छा ही है।

''इच्छा मात्रम् अविद्या'' का मतलब यह है कि मैं अच्छा पहनूँ, अच्छी सुन्दर वस्तु देखता रहूँ, अच्छी चीज़ प्राप्त करूँ – इस प्रकार की स्वार्थ भरी और दुनियावी इच्छाओं की अविद्या होनी चाहिए। इच्छा एक शक्ति है तो क्यों न उसको दूसरों की भलाई के लिए इस्तेमाल करें और श्रेष्ठ समाज के निर्माण में उपयोग करें। इसी से स्वयं की स्थिति भी ऊँची होगी, विश्व भी सुखमय विश्व बनेगा और हम विश्व रचयिता के विश्व परिवर्तन के कार्य में पूर्णरूपेण सहयोगी बन जाएंगे।

❖

जीना अभी आया

नीलम चौधरी,
द्वारिका सेक्टर-7 (नई दिल्ली)

जुलाई, 2011 में मैं ईश्वरीय ज्ञान के सम्पर्क में आई। शिवबाबा ने खुद मुझे अपनी ओर खींचा। मैं भगवान पर बहुत अधिक विश्वास करती थी। सारे त्योहार बड़े उत्साह से मनाती थी। व्रत करना, मन्दिर जाना अच्छा लगता था। शिवलिंग हमेशा घर में रहता था। सांसारिक रूप से सब कुछ मेरे पास था पर जीवन में संघर्ष भी था। मन उदास रहता था। मैं भगवान के सामने बहुत रोती थी, उन्हें बुलाती थी, देव-मूर्तियों से बातें करती थी। मुझे महसूस होने लगा था कि बिना गुरु के ज्ञान नहीं इसलिए एक पत्र लिखकर अपने घर के मन्दिर में रख दिया कि भगवान, मुझे गुरु चाहिए।

ठुकराया अपनों ने

इसी बीच अचानक पति ने हृदयाघात से शरीर छोड़ दिया। भगवान के सिवाय मेरा कोई नहीं रहा। इस भारी तूफान के कारण जीवन अस्त-व्यस्त हो गया और सुखी परिवार बिखर गया। मैं दिन-रात रोती रहती। घर और बच्चों की कोई सम्भाल न कर पाती। मुझे जरूरत थी स्नेह और सहानुभूति की पर हुआ सब कुछ उलटा। जहाँ अपनों ने ठुकराया वहाँ कुछ अच्छे लोगों ने मेरी मदद की। तीन मास बीत जाने के बाद भी ग़म भूल नहीं पा रही थी। मैं तड़पती रहती थी, न भूख लगती थी, न प्यास। एक दिन बच्चों ने टी.वी. चला रखा था। अचानक मेरा ध्यान गया तो उसमें ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रम की समाप्ति के बाद राजयोग के बारे में बताया जा रहा था। स्क्रीन (पर्दे) पर कुछ फोन नं.भी लिखे हुए आ रहे थे। मन में आया, क्यों न वहाँ जाकर पूछूँ कि भगवान कहाँ हैं, उन्हें पूजते हुए भी सुख-शान्ति क्यों नहीं मिलती और मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ?

सारे प्रश्न पूछ डाले

ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मैं सेवाकेन्द्र पर जा पहुँची जहाँ बहुत शान्ति थी। निमित्त बहन ने बहुत प्यार से स्वागत किया। मैंने उन्हें सारी बात बताई और फिर वही प्रश्न पूछ डाले जो मैं मन में लिए हुए थी। बहन ने मुझे प्यार से समझाया, इससे मुझे बहुत शक्ति मिली। उस रात मैं तीन महीनों के बाद पूरी तरह से सोई। इतनी गहरी नींद तो मुझे अपने सुख के दिनों में भी कभी नहीं आई थी।

बाबा मुझसे दूर नहीं

सेवाकेन्द्र पर जाकर मैं खुद से मिली, खुदा से मिली। कितना सहज है यह सब। बाबा ने मानो नया जीवन दे दिया। सच कहूँ तो जीना मुझे अभी आया। बहनें धन्य हैं, जो परियों की तरह सूक्ष्म लोक से उतरी हैं, ज्ञान-गंगाएँ बन सबको ज्ञानामृत पिला रही हैं। अब बाबा मुझसे दूर नहीं, मुश्किलें, फिक्र और चिन्ता मेरे पास नहीं। यह ईश्वरीय ज्ञान अनमोल है, शब्दों में वर्णन करना सम्भव नहीं है। यह सुख और सन्तोष से भरने वाला है। देह के सम्बन्ध सब झूठे हैं। सच्चा प्यार बाबा का है, जो युगों का साथी है। आज मैं अकेली नहीं हूँ, शिवबाबा मेरा साथी है। मैं बाबा से बहुत बातें करती हूँ और मुसकरा कर आँखों से कहती हूँ, बाबा मेरे साथ है, फिर डरने की क्या बात है। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1.ऋषिकेश- महिला नेता शिखर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.बिन्नी बहन तथा अन्य सुप्रसिद्ध महिलाएँ। **2.शान्तिवन-** कर्नाटक स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी, मैसूर के साथ एम.ओ.यू.पर हस्ताक्षर अवसर पर उपस्थित हैं कुलपति प्रो.एम.जी.कृष्णन, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.लक्ष्मी बहन, ब्र.कु.करुणा भाई तथा अन्य। **3.चूरू-** राजस्थान के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता राजेन्द्र राठौड़ को 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' की जानकारी देते हुए ब्र.कु.सुमन बहन। **4.गुम्मा (शिमला)-** आध्यात्मिक मेले का अवलोकन करने के पश्चात् विधायक भ्राता अनिरुध सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शकुंतला बहन। **5.अहमदनगर-** अभिनेत्री बहन हेमामालिनी को 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' प्रोजेक्ट की जानकारी देते हुए ब्र.कु.दीपक भाई। **6.बहादुरगढ़-** विधायक भ्राता नरेश कौशिक को वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु.अंजली बहन तथा ब्र.कु.विनीता बहन। **7.चालिसगाँव-** विधायक भ्राता उनमेश पाटिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.वन्दना बहन। **8.भुवनेश्वर-** प्रसिद्ध उड़ीया पार्श्वगायक भ्राता अरविंद मुदुली को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.लीना बहन। **9.पदमपुखरी (डिमापुर)-** सेवाकेन्द्र के रजत जयंती समारोह का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्र, नागालैण्ड के निदेशक डॉ.चन्दन राजखोवा, ब्र.कु.सत्यवती बहन, ब्र.कु.मोहन सिंघल, ब्र.कु.रजनी बहन तथा अन्य। **10.राजनांदगाँव-** 'सफल जीवन-सुखद जीवन' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद भ्राता अभिषेक सिंह, ब्र.कु.डॉ.प्रभा मिश्रा तथा ब्र.कु.पुष्पा बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 25th of each Month &
Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : February, 2015.

जनकपुर-
नेपाल के राष्ट्रपति महामहिम डॉ.रामवरण यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सृजना बहन तथा ब्र.कु.भगवती बहन।

शान्तिवन-
वैज्ञानिक एवं अभियन्ता प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, ब्र.कु.निर्वैर भाई, राष्ट्रीय उर्वरक निगम लि.की मुख्य प्रबंध निदेशक बहन नीरू अबरोल, ब्र.कु.मोहन सिंघल, ब्र.कु.सरला बहन तथा अन्य।

नई दिल्ली-
परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन एवं नारी के सम्मान और प्रतिष्ठा की पुन:स्थापना विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.रनबीर सिंह, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.शुक्ला बहन, ब्र.कु.शिवानी बहन, अध्यक्ष, राष्ट्रीय आयोग पिछड़ा वर्ग, भाता वी. ईश्वरैय्या, राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा बहन ललिता कुमार मंगलम तथा अन्य।

सोनई (राहूरी)-
महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम भाता विद्यासागर राव से 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' के संकल्पपत्र पर हस्ताक्षर कराते हुए ब्र.कु.दीपक भाई तथा ब्र.कु.ऊषा बहन।